

VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

**Year 18, Issue 69
Jan.-March, 2021**



**EDITOR-PUBLISHER : Dr. Sneh Thakore - Awarded By The President Of India
Limka Book Record Holder**

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा



सम्पादन व प्रकाशन

डॉ. स्नेह ठाकुर

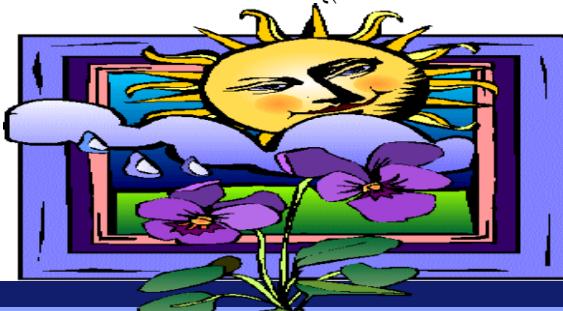
भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
लिम्का बुक रिकोर्ड होल्डर

वर्ष १८ - अंक ६९, जनवरी - मार्च २०२१

कल का सूरज

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

मैं कल फिर आऊँगा
उगूँगा बंजर खेत में
किसी आत्महत्या करते किसान के
उजाला बाटूँगा अँधियारे घरों को
जहाँ आज भी बच्चा लालटेन की रोशनी में
ककहरा याद करता है
उषण्ठा दूँगा उस हिम-पुरुष को
जो ठिररते काट रहा है सर्दी
दादा-परदादा के फटे हुए कम्बल में
धधकूँगा ज्वाला बन
शोषण-अन्याय-ईर्ष्या-द्वेष और पूर्वाग्रहों के विरुद्ध
तपूँगा किसी सूर्यपुत्र की तरह
'अग्निसागर' का अग्निसागर बन
मेरे मित्र, मुझे गलत मत समझना
मैं अस्ताचल को बढ़ते हुए उदास अवश्य था
पर हारा नहीं हूँ
मैं आज भी लड़ रहा हूँ
एक अनंत युद्ध से
तुम्हारे सुख के लिए
विश्व-शांति और वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए
मैं डूबता सूरज हूँ
कल का यौवन हूँ
चढ़ते सूरज को प्रणाम करने वाले दोस्त,
मैं निराशा को आशा में बदलता
जन-जन का जीवन हूँ.



वसुधा

सम्पादन व प्रकाशन : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
दीवाली	डॉ. शशि ऋषि	२
महाप्रलय	डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'	४
नव वर्ष	डॉ. ऋतु माथुर	५
गीता सार	अविनाश कुमार	६
वन्दे अखण्ड भारत	अरविन्द भारत	९
यह पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों के लिए		
तेजाब की नदी है	दयानंद पाण्डेय	१०
हाँ! ये क्यूँ हुआ?	अरुण तिवारी	१२
सरस्वती वंदना	अंकुर सिंह	१४
विश्व हिंदी दिवस के प्रस्तावक श्री वीरेन्द्र		
कुमार यादव से एक मुलाकात	डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'	१५
हिंदी महान्	डॉ. स्नेह ठाकुर	१७
भारतीय साहित्य और उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा	डॉ. विमलेश कांति वर्मा	१८
मेरा शहर	वंदना वात्स्यायन	२२
भारतीय शिक्षा में सकारात्मक		
परिवर्तन की पहल	डॉ. गिरीश्वर मिश्र	२५
तलाश	विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'	२८
यह तुम तो नहीं!	अनुप्रिया	२८
सीपियाँ, समुन्दर और सरकार	डॉ. संदीप अवस्थी	३०
नारी अस्मिता प्रश्नों के दायरे में क्यो?	डॉ. मुक्ता	४०
यादों के धागों से	अंकिता	४३
अलविदा और स्वागत	संतोष खन्ना	४४
कल का सूरज	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह 'शशि'	१ अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्घृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>, kavitakosh.org/vasudhapatrika

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

गत वर्ष केवल भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व कोरोना से त्राहि-त्राहि कर उठा था. एक छोटे-से वायरस ने जगत में अपने नाम का डंका बजवा दिया था. कहते हैं न कि एक छोटी-सी चींटी विशालकाय हाथी की सूँड में घुस उसे बदहवास कर देती है. यही कोरोना की सुनामी ने किया. सबसे बड़ा कहर यह रोग जो सब पर बरपा रहा था उसका एक विशेष कारण इस व्याधि की औषधि का न होना था. बल्कि इसकी औषधि क्या इसके बारे में तो किसी भी प्रकार की जानकारी का न होना सबसे बड़ी समस्या थी. अतएव रोग के प्रति अज्ञानता के कारण इस व्याधि की औषधि का निर्माण न हुआ. मानव अज्ञात शत्रु से डरता है; क्योंकि वह उस शत्रु के बारे में कुछ भी नहीं जानता, न उसकी कमियों को और ना ही उसके गुणों को, उसकी विशेषताओं को. शत्रु को हराने के लिए उसके गुण और दोष दोनों की ही जानकारी का होना अति आवश्यक है. यही कारण है कि जब तक वैज्ञानिक इसकी तोड़निकालते तब तक इस वायरस ने अनेकों देश की जनता को मौत के आगोश में सुला दिया था. अब भी हम पूर्ण रूप से कोरोना के शिकंजे से मुक्त नहीं हुए हैं; क्योंकि इसकी वैक्सीन का उत्पादन अभी भी इतनी मात्रा में नहीं हुआ है कि यह सबके लिए पूर्ण रूप से पर्याप्त हो. स्वास्थ्य-सम्बन्धी कार्यकर्ताओं एवं इससे पीड़ित रोगियों को यह वैक्सीन देना आरम्भ हो गया है. इसी तरह आगे भविष्य में भी क्रमशः आवश्यकतानुसार इसका वितरण होगा. अतः यद्यपि कि कोरोना वायरस की यह वैक्सीन अभी भी सभी के लिए उपलब्ध नहीं है तथापि आशा का दीप प्रज्ज्वलित हो चुका है. क्योंकि यह तथ्य आश्वासित कर रहा है कि भविष्य में बड़ी शीघ्रता से यह वैक्सीन सभी के लिए उपलब्ध होने वाली है.

मेरे बड़े भाई डॉ. शशि ऋषि ने अपनी निम्नांकित कविता द्वारा दीपावली, हिन्दू नव-वर्ष, आंगल नव-वर्ष, कोरोना आदि के बारे में जो वर्णन किया है, जो समीचीन है, जो गत एवं आगत वर्ष को जोड़ रहा है, जिसने दो विभिन्न संस्कृतियों के नव वर्ष में सामंजस्य बैठा, समीकरण कर समीकृत किया, उसी को यहाँ उद्धृत कर रही हूँ-

दीवाली

डॉ. शशि ऋषि

दीवाली के कुछ नए रूप और रंग

परिवार, दोस्तों और समाज के संग.

दीवाली एक आनंदमय उत्सव है

प्रेरक, प्रोत्साहन-भरा, मौज़ी त्यौहार है

पूजा, पकवान, आतिशबाज़ी का अवसर है

नए साल, नई सोच की शुरुआत है.

उत्तर भारत में धार्मिक महत्वपूर्ण त्यौहार है

विजयी राम-सीता का अयोध्या आने का उत्सव है

बुराई पर अच्छाई की विजय का उद्घोष है

तत्पश्चात् भारतीय नूतन वर्ष का शुभारम्भ है.

सत्य का झूठ पर, ज्ञान का अज्ञान पर

उजाले का अँधेरे पर, आशा का निराशा पर

मंगल का अमंगल पर

विजय का प्रतीक है.

अब हम हृदय में ज्योति जलाएँ
 अंदर बाहर दीये जलाएँ
 नए रिश्तों को अपनाएँ
 पुराने रिश्ते और मज़बूत बनाएँ.

शांति, प्रगति की ओर कदम बढ़ाएँ
 आस्था-आशा में विश्वास बढ़ाएँ.

करोना का दीवाली-अवसर पर गहरा असर हुआ है
 करोना वायरस अब पूरे संसार की समस्या है
 इसने पूरे विश्व को ललकारा है
 करोड़ो घर तबाह किये हैं.

मिलकर इस अदृश्य शत्रु से लड़ना होगा
 विज्ञान की मदद से पराजित करना होगा
 महामारी-सर्वव्यापी रोग से बचना होगा
 हमारी आशाएँ टीका मिलने पर निर्भर हैं.

परिवर्तन संसार का नियम है
 हमें भी अपनी सोच बदलनी होगी
 अप्रत्यक्ष मिलन की कोशिश करनी होगी
 हर समय सुरक्षा की व्यवस्था रखनी होगी.

सब मधु-मेह रोग से घबराते हैं
 मिठाई खाने से डरते हैं
 अब काजू, किसमिस, और बदाम
 हैं उपयुक्त भेंट, दीवाली के नाम.

आपकी उन्नति हो, घर-घर में लक्ष्मी आये
 परिवार सुखी हों, विश्व में सुख-शांति छाये
 दीवाली खुशहाली लाये, आप जश्न मनाएँ
 नूतन वर्ष मंगलमय हो, हमारी शुभकामनाएँ। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥

कोरोना काल की व्युत्पत्ति है वेबिनार जो घर बैठे आपको विचार-विमर्श का साधन उपलब्ध कराता है. सभी की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपने वेबिनार में स्थान दिया. आठ मार्च को आने वाले नारी दिवस पर विश्व की समस्त नारियों का अभिवादन जो अपने ममतामयी रूप से संसार का भरण-पोषण कर एक आदर्शमय समाज की स्थापना करती हैं. नव वर्ष रोगमुक्त हो, सद्ब्रावनापूर्ण हो। “ॐ सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥



महाप्रलय

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
(माननीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री)

जग में, विष का प्याला भर,
मैंने खूब पिया है.
दंशन करते साँपों को भी,
मैंने प्यार किया है.

हृदय क्या पाषाणों को,
स्वयं पिघलते देखा है.
सघन वनों की भीषणता को
सहज बदलते देखा है.

घोर अँधेरी रातों में,
चाँद चमकते देखा है.
कागज के फूलों को मैंने,
खूब महकते देखा है.

सुख के, दुःख के, आँसू देखे,
जन-जन निर्भय देखा है.
क्षण में बनते और बिगड़ते,
महाप्रलय भी देखा है.



नव वर्ष

डॉ. ऋषु माथुर

नवीन भोर का उत्कर्ष
नव वर्ष की प्रभा है
आने को विकल
नवोन्मेष की किरणें हैं
बिखरने को उत्कल
नृत्योल्लासित है आनंदना
देती दिव्य ताल
उदित हुआ नवीन भानु
विशाल आकाश भाल
प्रकृति की प्रफुल्लता है
छाई सकल हे मानव-मन-नयन उमंगों से
सजल है स्पष्ट यह संदेश
उस मुदित नवीन भोर का सरल
पानकर हो रही उद्दीप्त जो
विषमताओं का हलाहल गरल।



गीता-सार

अविनाश कुमार

गीता प्रभु के श्रीमुख से उपजा वह ज्ञान है जिसे प्राप्त कर मनुष्य न केवल अपने दुखों का निवारण करता है, बल्कि अपने जीवन के ध्येय और अनंत ब्रह्म को समर्पित हो जाता है। यूँ तो गीता की चर्चा घर-घर में होती है, किन्तु गीता के दिव्य ज्ञान का लाभ बहुत ही कम लोग उठा पाते हैं। इसका एक कारण है कि गीता संस्कृत में लिखी गयी है, और अनेक भाषाओं में अनुवादित होने के बावजूद, प्रत्येक अनुवाद में लेखक / सम्पादक / प्रकाशक के अपने-अपने दृष्टि-बिन्दु आ जाने के कारण उसी गीता के अनेक अर्थ निकाले गए और प्रत्येक टिप्पणी के उपरांत पाठक भ्रमित अधिक हुआ है, प्रेरित कम।

हमारी चेष्टा है कि गीता के दिव्य ज्ञान को हम सरल हिन्दी काव्य भाषा में प्रस्तुत कर सकें ताकि अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें।

गीता १८ पुराणों के ज्ञान और विद्या का निचोड़ है – और १८ योगों के द्वारा प्राणी को परमेश्वर से जोड़ने का सूत्र है। यहाँ यह जानने योग्य है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए भी मनुष्य को १८ इंद्रियों की आहुतियाँ देनी होती हैं –

५ ज्ञानेन्द्रियाँ – जिनके द्वारा हम इस सृष्टि को जान सकते हैं – जैसे कि आँखें, कान, जीभ, नाक और त्वचा।

५ कर्मेन्द्रियाँ – जिनके द्वारा हम सृष्टि को जानने के पश्चात्, कर्म कर सकते हैं – जैसे कि हाथ, पैर, भाषा, प्रजनन और पायु तत्व।

५ प्राण – प्राण, समान, अपान, उदान, व्यान।

और ३ - मन, बुद्धि एवं चित्त।

अध्याय १-६ में श्री कृष्ण अर्जुन को कर्म योग से परिचित कराते हैं, ताकि अर्जुन फल और परिणाम की चिंता करे बिना, अपना वह कर्म करे जो उसके क्षत्रिय धर्म के अनुकूल है।

जब अर्जुन कर्म योग जानने के बाद भी अपनी शंका दूर नहीं कर पाता है, तो प्रभु अध्याय ७-१२ में, भक्ति योग के द्वारा ईश्वर की अनंत माया, चर-अचर, जड़-चेतन में व्याप्त अपने स्वरूप से उसे अवगत कराते हैं, ताकि अर्जुन इस संसार के मोह को छोड़ कर, ईश्वर की भक्ति में लीन हो सके।

अंततः अध्याय १३-१८ में श्री कृष्ण ज्ञान-योग के द्वारा अर्जुन को सात्त्विक, राजसी एवं तामसिक गुणों से परिचित कराते हैं जिससे वह अपने धर्मानुसार वह कर्म करे जो उसको यश, कीर्ति, विजय और मोक्ष दिला सके।

तो आइये, पहले हम गीता महात्म का पाठ करें और तत्पश्चात् पहले अध्याय – अर्जुन विषाद योग में अर्जुन कि दुविधा को समझें।

गीता महात्म्य

जो मानव शुद्ध चित्त से, प्रेम से गीता पाठ करें

वे भय और शोक से दूर रहें और हरि को प्राप्त करें।

गीता पाठ से हर जाते हैं, राग-द्रेष-संताप

धुल जाते हैं, इस जन्म के व पूर्व जन्म के पाप।

प्रतिदिन जल से स्नान ज्यों, तन का मैल भगाए
एक ही गीता स्नान सारे जग का मल ले जाये।

गीता तो स्वयं प्रभु के श्रीमुख से ही उपजा वर्णन है
इसके आगे वेद पुराण का, क्या ही कोई प्रयोजन है!
पूरी महाभारत कथा का गीता में ही सार हुआ,
गीता पढ़ लेने वाला, जन्म चक्रों से पार हुआ।
स्वयं गोविन्द वेदों की गैय्या से गीता दुर्घट दुहाते हैं
बछड़े समान अर्जुन को पहले, भक्तों को बाद पिलाते हैं।
गीता ही है शास्त्र श्रेष्ठतम, केशव श्रेष्ठतम देव,
हरि ही श्रेष्ठतम नाम भये, सत्कर्म ही श्रेष्ठ सदैव।

अध्याय १ – अर्जुन विषादयोग -

इस अध्याय में सञ्चय धृतराष्ट्र को महाभारत युद्ध का परिचय देते हुए अर्जुन की व्यथा का वर्णन करते हैं कि किस तरह वे अपने सगे सम्बंधियों को मरने-मारने को तैयार देख कर व्यथित हो उठते हैं।

धृतराष्ट्र – धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

मामका: पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्चय॥१॥

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्ध करने को आये

क्या करते हैं पाण्डव, कौरव, संजय मुझे बताएँ॥१॥

संजय - दुर्योधन ने व्यूह से बंधित, देखी पाण्डव सेना

निकट गुरु के हाथ जोड़ कर, शुरू किया यह कहना॥२॥

हे गुरुवर - शत्रु पक्ष की, सेना देखें विशाल

जिन्हें सँभाले स्वयं आपके, शिष्य द्रुपद के बाल॥३॥

दुर्योधन ने द्रोण को उकसाने के लिए द्रुपद का नाम लिया -

आप, पितामह की छाया में, हम हैं पूर्ण सुरक्षित

उधर भीम के होते भी, शत्रु जीत है सीमित॥१०॥

दुर्योधन भीम से घबराता था, इसलिए अपने डर को सम्बोधित कर रहा है।

भीष्म ने अपना शंख बजाया – सिंह की जैसे गर्जन

उसके घोर घोष-नाद से, प्रसन्न भया दुर्योधन॥१२॥

पांचजन्य से करें घोषणा, स्वयं त्रिलोकीनाथ

अर्जुन फूँके देवदत्त, भीम पौँड्र के साथ॥१५॥

पवन पुत्र की छाया वाले, रथ पर बैठे वीर

कुरु पुत्रों के प्राण हरण को, अर्जुन भए अधीर॥१९॥

कृष्ण से बोले, रथ को स्वामी, आगे थोड़ा बढ़ाएँ

बीच में दोनों सेनाओं के, हे केशव ले जाएँ॥२०॥

मुझे देखना, रण भूमि में, कौन पड़ेगा भारी

दुर्योधन की कुबुद्धि ने, किस की मति है मारी॥२३॥

मंद-मंद मुसकाए केशव, इच्छा अर्जुन जान

अपने रथ को रण भूमि के, बीच दिया स्थान॥२४॥

भीष्म, द्रोण वीरों की सेना, है अब तेरे समक्ष
हे अर्जुन! यहाँ से देखो, युद्ध के दोनों पक्ष॥२५॥

कृष्ण जान बूझ कर भीष्म और द्रोण का नाम लेकर अर्जुन के मन को टटोल रहे हैं -

अर्जुन देखो! सामने लड़ने, खड़े हैं दादा ताऊ
चाचा, पुत्र, पौत्र, ससुर, मित्र, गुरु, और भाऊ॥२६॥

परिजनों को युद्धातुर देख, अर्जुन का मन डोला
करुणा भरे, रुधि स्वरों में, कुंती पुत्र यह बोला॥२७॥

इन्हें देख मेरे अंग शिथिल और, मुख है सूखा जाये
इनसे रण की मात्र चेतना, तन में कम्पन लाये॥२९॥

मैं कुल का जो अंत करूँ तो, धर्म को मिलता श्राप
अंत धर्म का होने से, कुल में फलता पाप॥४०॥

हे भगवन! ये सुना है हमने, करे जो कुल का नाश
अनंत काल तक ऐसे जीव, नरक में करते वास॥४४॥

अर्जुन ने फिर धनुष बाण निज, नीचे दिए उतार
रथ के पीछे जा वह बैठा, मन में शोक अपार॥४७॥



वन्दे अखण्ड भारतं

अरविन्द भारत

(मर जाऊँ मागूँ नहीं मैं निज हित के काज, परमारथ के काज में मोहि न आवत लाज)
जीवन सूत्र लिए बनारस में विश्व भारत शिक्षा का दीप जलाने वाले को समर्पित
महामना मदनमोहन मालवीय जी के सम्मान में अबोल से भाव ~~

हाँ, स्वप्र तो मेरा भी एक अपना
स्वप्र सदियों पुराना मनुष्यता का
मनुष्य की अंतरात्मा का स्वप्र
जिसे मैंने नाम दिया है भारत !
स्वप्र जो मेरे हृदय की धड़कन है
स्वप्र जो मेरी चेतना में सोया है
स्वप्र जिनसे मैं पल-पल ज़िंदा हूँ
उन्हीं स्वप्नों का यथार्थ है भारत !
मेरा स्वप्र एक सनातन यात्रा है
जो अनंत से अनंत तक फैला हुआ है
भूलों को याद दिलाना, सोतों को जगाना
चितरंजन साधना स्वप्र साधक है भारत !
मेरी आंतरिक गरिमा और गौरव का स्वप्र
आकाशगंगा बन बिखर जाए वसुधा पर भारत
मनुष्यता का भाग्य है मेरा स्वप्रिल भारत
आध्यात्म और ज्ञान का पावन प्रकाश है भारत !
मैं अपने स्वप्नों को पंख दे अकाश देता रहूँगा
यथार्थ में उतरेंगे सितारे जो सुनहरे अतीत हमारे
पंख जख्मी जरूर होंगे और लहू रिसेगा कतरा-कतरा
पर जब तक पंखों में जान, मेरी उड़ान है भारत |
एक आत्मिक सम्वाद अपने भारत से,
आत्मा के पथ से,
जिंदाबाद के रंग में,
इन्कलाब के यथार्थ में

यह पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों के लिए तेज़ाब की नदी है

दयानंद पाण्डेय

माफ़ कीजिए मेरी महिला मित्रों, इस महिला दिवस पर मैं आप को बधाई नहीं दे पा रहा हूँ, नहीं दे रहा हूँ। इस लिए कि यह महिला दिवस, यह हिंदी दिवस सब पाखंड है। देश और समाज में तो हिंदी, स्त्री और किसान तीनों की दशा और दुर्दशा एक जैसी ही है। यह तिरस्कृत लोग हैं। महिलाओं को आधी दुनिया कहा ज़रूर जाता है पर सच यह है कि यह आधी दुनिया नहीं, बहिष्कृत दुनिया है। यह समानता, यह बराबरी की बात कोरी लफ़काज़ी है। औरतों को इस पृथकी पर जन्म लेने का अधिकार नहीं दे सका है। पुरुषों की तिजोरी के बूते खाई अधाई स्त्रियों की बात अलग है, यह उन का ही महिला दिवस है। लेकिन कितनी स्त्रियाँ हैं जो खुल कर, खुशी से कह सकती हैं, कि हाँ, वह पूरी तरह आज़ाद हैं। व्यक्तिगत, सामाजिक, पारिवारिक, वैचारिक और आर्थिक रूप से आज़ाद हैं। सच यह है कि यह पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों के लिए तेज़ाब की नदी है। और इस नदी में डूब कर ही उसे जीना है।

अब कुछ स्त्रियाँ महिला दिवस मना कर खुश हैं तो यह खुशी उन्हें ज़रूर मुबारक! और जो स्त्रियाँ पुरुषों के कंधे पर बैठ कर, पुरुषों की तिजोरी के दम पर अपने को चैम्पियन माने बैठी हैं उन को यह उन की शान और रफ़तार भी मुबारक! स्त्री की सब से बड़ी ताकत है उस का मातृत्व। और हमारे इस समाज ने स्त्री के मातृत्व की आज़ादी तक को छीन लिया है। आप स्त्री की आज़ादी का सिर्फ़ इसी एक बात से अंदाज़ा लगा लीजिए कि स्त्री के पास अपनी कोख के विकल्प की आज़ादी भी इस बेरहम समाज ने छीन लिया है। यह कृतन्त्र समाज बेटी नहीं, बेटा की फरमाईश और आज़माईश में नाक से ऊपर तक डूबा पड़ा है। बेतहाशा भूण हत्याओं का कीर्तिमान क्या अनायास रच दिया गया है? बेटी के पिता को इस समाज ने दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया है।

बेटी को आप बेटों के बराबर पढ़ा-लिखा सकते ज़रूर हैं। हर एक बात में बराबर खड़ा कर सकते हैं लेकिन जब बेटी की शादी करने की बात आएगी तो यह सारी बराबरी धूँएँ की तरह उड़ जाती है। कोहरा बन कर सामने उपस्थित हो जाती है। दहेज का रावण आ कर खड़ा हो जाता है। बात करोड़ों की होने लगती है। विवाह कर के स्त्री गुलाम बन जाती है। नतीज़ा? भूड़ हत्या शुरू हो जाती है। स्त्री-पुरुष अनुपात बिगड़ जाता है। स्लोगन बनने लगते हैं, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ! यह दोनों बात किसी समाज में एक साथ कैसे चल सकती हैं? स्त्री की आज़ादी की बात कर महिला दिवस मनाओ और नारा लगाओ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ! यह तो वैसे ही है जैसे सरकार में एक साथ दो विभाग हैं, एक मद्य निषेध विभाग जो लोगों से शराब न पीने की अपील करता है, जब की दूसरा है आबकारी विभाग जो लोगों से शराब खरीदने की बात करता है। तो औरतों के साथ यह दोगलापन खत्म करने के लिए कोई आकाश से उतर कर नहीं आने वाला है। स्त्रियों को अपना अस्तित्व, अपनी आज़ादी, अपना स्वाभिमान खुद तय करना होगा। स्त्री अभी भी पुरुष के बिना पतवार की नाव समझी जाती है। यह देवी रूप आदि भी बेमतलब का दिखावा है। यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमंते तत्र देवताः! आदि भी ढकोसला है, बहुत बड़ा पाखंड है। एक तल्ख सच यह है कि आज के दिन स्त्री ही एकजुट नहीं रह गई है। स्त्री आपस में ही लड़ रही है। मर मिट रही है। जातियों के खाने खोमचे में भी वह बेतरह बँटी हुई है। स्त्री जब तक अपने तौर पर समुच्चय स्त्री बन कर नहीं खड़ी होगी, वह हारती रहेगी। पिटती रहेगी। हर मोर्चे पर। मजाज लखनवी ठीक ही लिख गए हैं कि - तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन

तू इस आँचल से एक परचम बना लेती तो अच्छा था।

लेकिन मजाज को यह लिखे भी अरसा हो गया। दिल्ली में निर्भया तो हरियाणा में मरुथल जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। औरतों की संख्या घट रही है, बलात्कारियों की संख्या बढ़ रही है। हम यह कौन सा समाज रच रहे हैं अपने लिए?

औरतों की स्थिति समाज में बहुत ही शर्मनाक है। औरतों को इस पृथ्वी पर जन्म लेने का अधिकार नहीं दे सका है। हाँ औरतों को सम्बोधित बेशुमार गालियों का नित नया शब्दकोश ज़रूर तैयार करता दीखता है। झगड़ा किसी भी को निपटाना हो औरतों को बेर्ड्ज़ित कर के ही पूरा होता है। अहिल्या, गांधारी, द्रौपदी से लगातार आज तक यह परम्परा जारी है। लगता नहीं है कि यह परम्परा कभी टूटेगी भी। बल्कि और मज़बूत होती जाती दिखती है। अब ऐसे माहौल में आप जी कर भी मुझ से महिला दिवस की बधाई चाहती हैं? यह तो हद्द है! माफ़ कीजिए, मैं नहीं दूँगा बधाई। जिस दिन बाधाओं से अपने दम पर पार पा लेंगी आप लोग, यकीन मानिए मैं पहला आदमी होऊँगा आप सब को बधाई देने वाला। अब ज्यादा क्या कहूँ, औरतों के हालात पर अपनी ही ग़ज़ल आप को यहाँ पढ़वा रहा हूँ -

उन के पास तोप तलवार टैंक है ऐटम बम भी ले कर चलते हैं

पर इतने कायर हैं कि माँ के गर्भ में उपस्थित लड़की से डरते हैं.

सारी सुविधाओं से लैस बात-बेबात गोली बंदूक चलाते रहते हैं

लेकिन जिगरा देखिए कि नौकरी करने वाली लड़की से डरते हैं.

उस के पास किताब है स्कूल जाती है मोबाइल कम्प्यूटर चलाती है

अजब लोग हैं इस शहर के जो एक छोटी सी लड़की से डरते हैं.

अपने ग़ौवारपन और जहालत से निकलना मंजूर नहीं है हरगिज

उन को तो हिजाब और बुरक़ा प्यारा है पढ़ी-लिखी लड़की से डरते हैं.

मंदिर में काली दुर्गा बना कर पूजने में ऐतराज नहीं है उन को

लेकिन घर समाज में औरत को बराबरी से बैठाने में डरते हैं.

वह चाहते हैं मोम की गुड़िया जो उन के पिघलाने से पिघल जाए

उन के जमाये से जम जाए अपनी सत्ता के ढह जाने से डरते हैं.

सोचे नहीं बिना ना नुकुर किए चूल्हे की आग में होम हो जाए

उन की गुलामी से कहीं इंकार न कर दे इस बात से बहुत डरते हैं.

मायके से आए तो खूब सारा दहेज़ लाए जुबान उस की सिली रहे

स्वेटर बुने मटर छीले सच न बोल दे मुसलसल इस बात से डरते हैं.



हा! ये क्यूँ हुआ ?

अरुण तिवारी

पहली,

जन्म लेने से पहले ही मारी गई
क्या वो बनती अजीजन, दुर्गा या लक्ष्मी
वो तो पूत की आशा पे वारी गई।

दूजी थी अनखिली,
खिलखिलाई नहीं
वह नावालिग बही,
सहमति के सम्बन्ध
वे ठहराते सही।

तीजी की देह
व्यापार बनकर बिकी,
वह खेत हो गई,
फिर रेत हो गई।
हा! ये क्यूँ हुआ ?

चौथी, जो पढ़ी
कुछ आगे बढ़ी,
प्रतिद्रुंदी समझ वो
खड़ा हो गया
फिर नीचे गिरा
ओं गिरता गया।
पाँचवीं, तो सुहागन
बीच आँगन मरी।
छठी के हिस्से में
सौत आ गई।

सातवीं ने जनी जो
संतान नहीं,
निंदकों के दिलों को
वो भा गई।
हा! ये क्यूँ हुआ!

आठवीं, माँ बनकर भी
निपूती रही,
पूत साथ रहते हुए भी
अनाथ हो गई।
नौवीं, घर से बाहर परी
मौत आयेगी कब,
ये मनाती हुई।
इक दिन अँधेरा हुआ,
शर्म.. वेशर्म सोई,
बागवाँ खूब जगा,
फिर क्यूँ बाग लुटा ?
मेड ही खेत को
क्या खुद खा गया ?
हा! ये क्यूँ हुआ ?

कुछ कर न सको गर
जुबाँ तो ये खोलो
ऐ मेरे देश बोलो
कब तक सहोगे
ये दर्द-ए-मंजर
कब तक रहोगे
इंसाँ मेरे मौन तुम ?
अब न कुछ तुम सहो
दिल को खोलो.. कहो
सोचो, ये क्यूँ हुआ ?
हा! ये क्यूँ हुआ ?

सरस्वती वंदना

अंकुर सिंह

हे विद्यादायिनी, हे हंसवाहिनी
करो अपनी कृपा अपरम्पार।
हे ज्ञानदायिनी, हे वीणावादिनी
बुद्धि दे, करो भवसागर से पार॥

हे कमलवसिनी, हे ब्रह्मापुत्री
तम हर, ज्योति भर दे।
हे वसुधा, हे विद्यारूपा
वीणा बजा, ज्ञान प्रबल कर दे॥

हे वाग्देवी, हे शारदे
हम सब है, तेरे साधक।
हे भारती, हे भुवनेश्वरी
दूर करो हमारे सब बाधक॥

हे कुमुदी, हे चंद्रकाति
हम बुधिद ज्ञान तुझसे पाएँ
हे जगती, हे बुद्धिदात्री
हमारा जीवन तुझमें रम जाए॥

हे सरस्वती, हे वरदायिनी
तेरे हाथों में वीणा खूब बाजे।
हे श्वेतानन, हे पद्मलोचना
तेरी भक्ति से मेरा जीवन साजे॥

हे ब्रह्म जाया, हे सुवासिनी
कर में तेरे ग्रंथ विराजत।
हे विद्या देवी, हे ज्ञान रूपी
ज्ञान दे करो हमारी हिफाजत।



विश्व हिंदी दिवस के प्रस्तावक वीरेंद्र कुमार यादव से एक मुलाकात

डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'

(निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन)

एक बार फिर इसी सप्ताह विश्व हिंदी दिवस का आगाज होने जा रहा है। वर्ष २००६ से प्रत्येक वर्ष दस जनवरी को भारत के विभिन्न दूतावासों और केंद्रीय सरकार के कार्यालयों आदि में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। विभिन्न हिंदी सेवी संस्थाएँ भी इस दिन हिंदी के प्रयोग-प्रसार सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। मन में कई बार यह प्रश्न उठता था कि आखिर कब और कैसे विश्व हिंदी दिवस मनाने की परम्परा प्रारम्भ हुई और इसके लिए किसने पहल की ?

आगे चलकर पता लगा कि विश्व हिंदी दिवस के प्रस्तावक हिंदी सेवी वीरेंद्र कुमार यादव हैं। वीरेंद्र कुमार यादव पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. जगदम्बी प्रसाद यादव जी के सुपुत्र हैं, जो करीब २५ वर्ष तक सांसद रहे और संसदीय हिंदी समिति के सदस्य व संयोजक भी रहे। उन्होंने केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करने में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न स्तरों पर हिंदी के विनम्र सेवक के रूप में बहुत अधिक काम किया था। पिता की भाँति पुत्र यानी वीरेंद्र कुमार यादव भी सदैव हिंदी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने में सक्रिय रहे हैं। हिंदी से जुड़े विभिन्न आंदोलनों में इनकी प्रमुख भूमिका रही है। ये 'अँग्रेजी अनिवार्यता विरोधी मंच', 'अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन', जिसने 'संघ लोक सेवा आयोग' के सामने विश्व का सबसे बड़ा धरना दिया, से जुड़े रहे। इन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद' की और हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए 'जगदम्बी प्रसाद यादव स्मृति प्रतिष्ठान' की स्थापना की, जिसके माध्यम से हिंदीतर प्रदेशों में दस हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। इनमें मुख्यमंत्रियों अथवा राज्यपालों की सहभागिता हुई है।

विश्व हिंदी दिवस के उनके प्रस्ताव और उसके लिए दस जनवरी के दिन का सुझाव देने के सम्बन्ध में मैंने सीधे वीरेंद्र कुमार यादव जी से बातचीत की। वीरेंद्र कुमार यादव ने बताया, 'मेरा यह विचार था कि हिंदी को विश्व-भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए और भारत के बाहर जहाँ कहीं भी भारतीय हैं और भारतीय दूतावास और उच्चायोग आदि हैं वहाँ पर हिंदी का वातावरण तैयार करने के लिए विश्व हिंदी दिवस मनाया जाना चाहिए। मेरी तरह अनेक विद्वान भी यह चाहते थे। अब प्रश्न था कि विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाए? मेरा प्रस्ताव था कि विश्व हिंदी दिवस दस जनवरी को मनाया जाना चाहिए। मैंने विदेश मंत्रालय के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा और भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन समन्वय समिति की बैठक में दिनांक ८ जून २००५ को प्रत्येक वर्ष दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाने के मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया।'

'दस जनवरी ही क्यों? आपने इसी दिन को विश्व हिंदी दिवस मनाने का जो प्रस्ताव रखा, उसका कुछ विशेष कारण तो रहा होगा?' जब मैंने यह प्रश्न पूछा तो वीरेंद्र कुमार यादव ने बताया, 'यह प्रस्ताव रखने के पीछे हिंदी भाषा से जुड़े कई ऐतिहासिक कारण हैं।' 'जैसे?' 'करीब २१ वर्ष तक तक दक्षिण अफ्रीका में रहने के बाद महात्मा गांधी ९ जनवरी १९१५ को भारत लौटे थे, और अगले ही दिन से वे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के

कार्य में लग गए थे। दूसरी बात यह है कि विश्व हिंदी सम्मेलनों की वर्तमान शृंखला की शुरुआत भी दस जनवरी १९७५ में नागपुर में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन से प्रारम्भ हुई थी, अगस्त २०१८ तक मॉरीशस पहुँचकर इसके ११ पड़ाव पूरे हो चुके हैं। इसलिए भी मुझे लगा कि विश्व हिंदी दिवस के लिए १० जनवरी बहुत ही उपयुक्त दिन होगा। एक बड़ा कारण यह भी था कि सात, आठ और नौ जनवरी को प्रवासी दिवस मनाया जाता है, जिसमें विदेशों से अनेक प्रवासी भारतीय भारत आते हैं। उसके अगले दिन विश्व हिंदी दिवस मनाने से वे भारत में आयोजित होनेवाले विश्व हिंदी दिवस के कार्यक्रमों में भी सहभागिता कर सकते हैं। इसलिए मुझे यह दिन ही उपयुक्त लगा और मैंने दस जनवरी का प्रस्ताव रखा।'

अब जबकि पिछले १५ वर्ष से लगातार दस जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है और अब कई दिन बाद देश दुनिया में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाने वाला है तो विश्व भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति को आप किस रूप में देखते हैं?

'प्रगति तो हुई है और लगातार हो रही है। लेकिन मैं यह समझता हूँ कि जब तक देश में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं होगा हमें विदेशों में उतनी सफलता नहीं मिल सकेगी। इसलिए जरूरी है कि देश में हिंदी को रोजगार की भाषा बनाया जाए। जब हिंदी रोजगार की भाषा बनेगी तो शिक्षा में भी इसकी माँग बढ़ेगी। हिंदी की जड़ें तो आखिरकार भारत में ही हैं। जब हिंदी भारत में पुष्पित-पल्लवित होगी तो ही इसकी टहनियाँ विश्व भर में फैलेंगी। इस प्रकार हिंदी को विश्व भाषा बनाने में मदद मिलेगी।'

हिंदी को, भाषा को लेकर आपकी अन्य कोई टिप्पणी? पूछने पर उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'इस सत्य को कोई नहीं झुठला सकता कि हिंदी न केवल भारत की बल्कि पड़ोसी देशों की भी एक प्रभावी सम्पर्क भाषा है। मुझे तो लगता है कि भाषा की राजनीति और राजनीति की भाषा ने मिलकर हिंदी की नियति का अपहरण कर लिया है। जब तक राजभाषा नीति और रोजगार नीति में सामंजस्य नहीं होगा तब तक हिंदी का कोई बड़ा कल्याण नहीं होगा। हिंदी का सर्वाधिक नुकसान शिक्षा और रोजगार से कटने के कारण हुआ है।'

वे आगे कहते हैं, 'यदि हम हिंदी और अन्य तमाम भारतीय भाषाओं को राजनीति के बजाय प्रगति के चश्मे से देखेंगे तो ही भारतीय भाषाओं का विकास हो सकेगा। नई शिक्षा नीति के माध्यम से सरकार ने एक बार फिर हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं और हिंदी को आगे बढ़ाने की जो योजना बनाई है मैं आशा करता हूँ कि उसका लाभ भारतीय भाषाओं को मिलेगा। दस जनवरी २०२१ को आयोजित होने वाले विश्व हिंदी दिवस के लिए सभी हिंदी प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। इस अवसर पर मैं सभी भारतवासियों से अनुरोध करता हूँ कि वे राष्ट्रहित में और राष्ट्र के सशक्तिकरण के लिए सब अपने हस्ताक्षर अपनी भाषा में ही करने का प्रण करें। तभी विश्व हिंदी दिवस मनाए जाने की सार्थकता होगी।'





हिन्दी महान्

डॉ. स्नेह ठाकुर

हिन्दी महान्
सभ्यता संस्कृति की पहचान

देववाणी से जन्मी

गुणों की खान

हिन्दी महान्।

भरपूर शब्दों की स्वामिनी

गहन अर्थ सम्पदा धारिणी

जन-जन का कण्ठहार

हिन्दी महान्।

साहित्य समृद्ध सरिता इसकी

विश्व में अविरल बहती

आनंदित करता मधुर निनाद

हिन्दी महान्।

टंकन-ध्वनि सर्वोत्तम इसकी

भाषाविदों ने मानी

सब भाषाओं की रानी

देवनागरी लिपि हमारी

कंप्यूटर विज्ञान वाहिनी

आज के युग की माँग

हिन्दी महान्।



भारतीय साहित्य और उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा

डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा
(भाषा वैज्ञानिक, डी.फिल., एफ.आर.ए.एस.)

भारत के सांस्कृतिक वैभव तथा भारतीय साहित्य की सम्पन्न परम्परा ने विदेशी विद्वानों को निरंतर आकृष्ट किया है। जर्मन विद्वान गेटे (१७४९-१८३२) ने तो कालिदास द्वारा लिखित नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम' की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे विश्व साहित्य की अन्यतम कृति माना है। सर विलियम जोंस (१७४६-१७९४) जो कलकत्ते के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में प्रतिनियुक्त थे उन्होंने भारतीय साहित्य की विशालता की चर्चा करते हुए यहाँ तक कहा कि एक जीवन में कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की अपनी विविधता तथा विशदता के कारण उससे पूर्णतः परिचित नहीं हो सकता। विलियम जोंस संस्कृत भाषा को तो ग्रीक और लैटिन भाषाओं से अधिक पूर्ण और श्रेष्ठ मानते थे। फ्रांसीसी विद्वान अलेन डैनियल (१९०७-१९९४) ने अपने ग्रन्थ 'भारत वर्ष का इतिहास' में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य को विश्व साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना है।

भारत के स्वतन्त्र होने से पहले सामान्यतः विदेश में भारतीय साहित्य से तात्पर्य संस्कृत साहित्य से ही होता था। यही कारण है कि जर्मन विद्वान गेटे, ब्रिटिश विद्वान विलियम जोंस तथा फ्रांसीसी विद्वान अलेन डैनियल सभी अपने भारत विषयक ग्रंथों में संस्कृत साहित्य की ही चर्चा और उसका मूल्यांकन करते हैं। स्टेन नो की पुस्तक 'इंडियन ड्रामा' तथा एम. विंटरनिल्ज की पुस्तक 'अ हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर' संस्कृत साहित्य की ही पुस्तकें हैं। संस्कृत साहित्य की वैश्विक प्रतिष्ठा के कारण ही यूरोप और अमरीका के सभी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पर्याप्त समय से संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन और अध्यापन हो रहा है। संस्कृत साहित्य के अंतर्गत जहाँ वैदिक साहित्य, उपनिषद्, पुराण, रामायण और महाभारत का अध्ययन होता है वहाँ कालिदास, भास, भवभूति, माघ तथा हर्ष आदि के ग्रन्थों का भी अध्ययन भारतीय विद्या विभागों में होता है।

भारतीय भाषाओं में हिंदी की भाषिक तथा साहित्यिक दृष्टि से भी अध्ययन - अनुसंधान की विदेशी परम्परा रही है। हिंदी भाषा के व्याकरण का पहला ग्रन्थ फारसी भाषा में लिखा गया मिर्जा खान का ब्रजभाषा व्याकरण ग्रन्थ वर्ष १६७६ में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद जॉन जोशुआ केटलार, हेडले आदि कितने ही विदेशी विद्वानों ने हिंदी के व्याकरणिक पक्ष पर लिखा पर हिंदी साहित्य के अध्ययन का सिलसिला फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी के ग्रन्थ 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास (१८७०)' से ही प्रारम्भ होता है जो फ्रांसीसी भाषा में हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक विश्लेषण का इतिहास परक पहला ग्रन्थ है। इतालवी विद्वान एल.पी. तेसीतोरी ने तो राम चरित मानस और वाल्मीकि रामायण के तुलनात्मक अध्ययन पर फ्लोरेंस विश्वविद्यालय से वर्ष १९११ में पी. एचडी. की उपाधि प्राप्त की थी। अँगरेज विद्वान जे.ई. कारपेंटर ने वर्ष १९१८ में थियोलोजी ऑफ तुलसीदास' विषय पर लन्दन विश्व विद्यालय से डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की थी। फ्रांसीसी

विद्वान प्रोफ. बोद्वील ने वर्ष १९३५ में तुलसीदास पर अपना शोध प्रबंध लिखा और रूसी विद्वान ए. पी. बरान्निकोव ने वर्ष १९३६में समकालीन हिंदी साहित्य पर अपना निबंध प्रकाशित कराया। इस प्रकार जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, इटली तथा रूस आदि सभी प्रमुख देशों में हिंदी साहित्य के विषयों पर विश्वविद्यालयों की उच्चतम शोध उपाधि की स्वीकृति विश्व स्तर पर भारतीय साहित्य की मान्यता का प्रमाण ही है।

वर्ष १९४७ में भारत के स्वतन्त्र होने पर और वर्ष १९५० में भारत जब विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र घोषित हुआ तो भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रति भी विश्व स्तर पर विदेशी विद्वानों का रुक्नान होना स्वाभाविक ही था। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारत की प्रधान भाषाओं का विकास हो सके इसके लिए भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची की कल्पना की और देश की १४ प्रमुख भाषाओं को अनुसूची में रखकर उनके विकास का दायित्व लिया। अनुसूचित भाषाएँ थीं - असमिया, उड़ीसा, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, मलयालम, संस्कृत व हिंदी। इसके बाद इस अनुसूची में सिन्धी, फिर नेपाली, कोंकणी और मणिपुरी, फिर बोडो, डोगरी, मैथिली और संताली जुड़ीं। आज अष्टम अनुसूची में २२ भारतीय भाषाएँ हैं। तत्वतः इन सभी २२ भाषाओं में लिखा और वाचिक साहित्य भारतीय साहित्य है। इन २२ भाषाओं में प्रारम्भ से ही हिंदी अपने संख्या बल तथा क्षेत्र विस्तार के कारण केन्द्रीय महत्व की भाषा बनी। वह देश में व्यापार, जनसंचार, शिक्षा, मनोरंजन तथा राजनीति की भाषा बनकर उभरी तथा उसे राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा की प्रतिष्ठा मिली।

भारतीय भाषाओं में संख्याबल की दृष्टि से हिंदी के अतिरिक्त बांग्ला, उर्दू, तथा तमिल भाषा का भी महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए विदेशी विद्वानों का ध्यान बांग्ला, उर्दू तथा तमिल की प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यिक समृद्धि के कारण उस ओर भी गया पर चूँकि सम्पूर्ण भारत को समझने के लिए हिंदी ही एक 'कुंजी भाषा' के रूप में मानी गई इसलिए सर्वाधिक व्यापक स्तर पर और वैश्विक क्षितिज पर हिंदी को ही सर्वाधिक मान्यता मिली। उर्दू को चूँकि हिंदी की एक भाषिक शैली के रूप में देखा गया और यह मान लिया गया कि फारसी लिपि के अतिरिक्त उर्दू और हिंदी में कोई विशेष अंतर नहीं है, इस दृष्टि से हिंदी के साथ ही उर्दू भी विश्वविद्यालय स्तर पर पढाई जाने लगी पर हिंदी की व्यापक मान्यता वैश्विक स्तर पर जो १९वीं शती में थी उसका २०वीं सदी में बहुत विस्तार हुआ।

यह विस्तार भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अमरीका, योरोप के विविध देशों में, खाड़ी के देशों में, आस्ट्रेलिया आदि देशों में देखा जा सकता है वहीं अनुसंधान के क्षेत्र में भी साहित्य के विविध पक्षों पर विश्व भर में अध्ययन और अनुसंधान हो रहा है। उल्लेखनीय बात साहित्य के सन्दर्भ में कही जा सकती है कि भारतीय साहित्य विशेषकर हिंदी साहित्य के अनुसंधान परक पक्ष पर विदेशी विश्वविद्यालयों में गम्भीर अध्ययन प्रारम्भ हुआ। इस सन्दर्भ में बेल्जियम के लयूवें विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर विनांद कैल्वर्ट के कार्यों का उल्लेख किया जा सकता है। कबीर, दादू, नानक तथा रैदास आदि संत कवियों के मूल पाठ का अनुसंधान जिसे पाठालोचन कहा जाता है उस क्षेत्र में उनके द्वारा किया गया अनुसंधान प्रोफ. माता प्रसाद गुप्त, प्रोफ. उमाशंकर शुक्ल तथा प्रोफ. पारस नाथ तिवारी के श्रम साध्य कार्य का स्मरण दिलाता है। डॉ. कामिल बुल्के ने 'राम कथा- उद्घव

और विकास' को अपने अनुसंधान का विषय बनाया। डॉ. आर. एस. मक्हेगर ने हिंदी कृष्ण साहित्य का, इमरे बंगा ने घनानंद का, लिंडा हेस ने कबीर के साहित्य का अनुसंधान परक अध्ययन प्रस्तुत किया।

भारतीय साहित्य का एक दूसरा आयाम विदेश में बसे हुए प्रवासी भारतीयों द्वारा भारतीय भाषाओं में लिखा गया साहित्य है। प्रवासी भारतीयों की संख्या विश्व में आज ढाई करोड़ से अधिक बताई जाती है। प्रवासी भारतीय भी दो कोटि के हैं। पहले वे हैं जो गिरमिट प्रथा के अंतर्गत बहला फुसलाकर फ़ीजी, मारीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में ले जाए गए थे तथा गिरमिट की अवधि समाप्ति पर वहाँ बस गए। दूसरी कोटि में वे भारतीय हैं जो भारत के स्वतन्त्र होने के बाद से सुन्दर भविष्य और धन अर्जन के निमित्त अमरीका इंग्लॅण्ड, जर्मनी, कनाडा और स्ट्रेलिया आदि देशों में गए और वहाँ बस गए पर इन प्रवासी भारतीयों के मध्य हिंदी भारतीय अस्मिता की प्रतीक बनी। प्रख्यात भारतीय अमरीकी हिन्दी कथाकार डॉ. सुषुम बेदी अमरीका में बसे हुए प्रवासी भारतीयों के बारे में लिखती हैं -

'हर हिन्दुस्तानी यहाँ एक व्यापारी है, अमेरिका के एक बड़े बाज़ार में हिन्दुस्तानी अपनी प्रतिभा, ज्ञान, कौशल और अनुभव को लेकर आता है और खुद को चढ़ा देता नीलामी पर / अच्छा दाम लग जाए तो क्या खूब बढ़िया-सी नौकरी, सुन्दर-सा घर, नमकीन-सी बीवी और बलार्ड गर्ल फ्रेंड सबका सौदा हो जाता है / न बढ़िया दाम लगे तो भी बैरा या दुकानदार की नौकरी ही सही / ले देकर किसी को यह सब धाटे का सौदा नहीं लगता।'

-सुषुम बेदी, हवन, पृष्ठ १२९

भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति मानव की सहजात प्रवृत्ति है। यही कारण है कि ये प्रवासी भारतीय जहाँ अपनी भाषा की सुरक्षा, संरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर निरंतर प्रयत्नशील हैं वहाँ वे अपने भावों और विचारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति अपनी हिंदी में करते हैं। उनकी हिंदी हमारी हिंदी की तरह परिनिष्ठित हिंदी नहीं है। फ़ीजीवासी अपनी हिंदी को फ़ीजी हिंदी या फ़ीजी बात कहते हैं, सूरीनाम में जिस हिंदी का विकास वहाँ के भारतीयों ने किया है उसे वे सरनामी, सरनामी हिंदी और सरनामी हिन्दुस्तानी कहते हैं तथा दक्षिण अफ्रीका के भारतीय अपनी हिंदी को नेटाली हिंदी कहते हैं। दक्षिण अफ्रीका में पहुँचे विविध भाषा-भाषी भारतीयों ने किस प्रकार पारस्परिक सम्पर्क के लिए हिंदी को अपना लिया इसका बड़ा जीवंत चित्रण भवानी दयाल सन्यासी ने अपनी पुस्तक 'प्रवासी की आत्म कथा' में इस प्रकार किया है - "जब गिरमिट लिखाकर भारतीय मजदूर दक्षिण अफ्रीका जाने और वहाँ आबाद होने लगे तो उनके सामने परस्पर विचार-विनिमय की विकट समस्या पैदा हुई। गिरमिटियों की गाँठ में तो बँधे थे केवल हिन्दी-भाषी और मद्रासी। उनके पीछे-पीछे गुजराती, तथा कुछ अन्य प्रान्त-वासी भी व्यवसाय के विचार से स्वतंत्ररूपेण वहाँ जा पहुँचे। इस प्रकार हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रान्तों के मनुष्यों का वहाँ जमाव हो गया। उनमें कोई हिन्दी बोलता था तो कोई गुजराती, किसी की बोली तामिल थी तो किसी की तेलगु, कुछ मलयालम-भाषी थे तो कुछ कन्नड़-भाषी। एक दूसरे की बोली समझ नहीं पाते थे। इससे काम-काज में बड़ी अड़चन होने लगी, कब तक पड़ोसी के सामने मौन साथे रहते, कहाँ तक इशारे से काम किया करते? यह स्थिति तो बड़ी अवांछनीय थी। आपस में बातचीन करने के लिए एक सार्वजनिक भाषा का सवाल सामने आया, जिसे उन्होंने

बड़ी सुगमता से हल कर लिया। इस बात पर विचार करने के लिए न कहीं सभा-सम्मेलन की बैठक हुई थी, न विद्वानों की वक्तुताएँ और न किसी प्रकार प्रकार की सार्वजनिक चर्चा ही। प्रत्येक भारतीय ने व्यक्तिगत रूप से अपने मन में प्रस्ताव पास कर लिया कि विभिन्न भाषा-भाषियों से बातचीत करने के लिए हिन्दी से काम लेना चाहिए। हिन्दी अपनी सरलता के प्रताप से प्रवासी भाइयों की राष्ट्रभाषा बन गई। नेटाल में मद्रासियों की संख्या सबसे अधिक है और हिन्दी-भाषियों की तादाद है उनसे बहुत कम। पर मद्रासियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य हो गया। तामिल और तेलगु द्रविड़ भाषाएँ तो बहुत अच्छी बोल लेता है और कोई टूटी-फूटी हिन्दी, पर बोल लेते हैं सभी। यहाँ यह भी कह देना अप्रासंगिक न होगा कि केवल दक्षिण अफ्रिका का ही नहीं, प्रत्युत जिन-जिन उपनिवेशों में हमारे देश-वासी गिरमिट की प्रथा में गये हैं, यद्यपि वे एक-दूसरे से हजारों कोस दूर हैं, कोई प्रशांत महासागर के तट पर है तो कोई हिन्दू महासागर के किनारे, कोई अमेरिका के दक्षिण भाग में है तो कोई अफ्रिका के दक्षिणीय भाग में, तो भी यह देखकर विस्मय होता है कि उन सभी देशों के प्रवासी भारतीयों ने पारस्परिक व्यवहार के लिए एकमत से हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा स्वीकार किया – उसी से अपनी तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति की।"

प्रवासी की आत्मकथा - भवानी दयाल सन्यासी प्रवासी भारतीयों की राष्ट्रभाषा पृष्ठ १६८

फीजी के कमला प्रसाद मिश्र, जोगिन्दर सिंह कैवल, प्रोफ. सुब्रमनी, प्रोफ. रेमण्ड पिल्लई, श्री गुरुदयाल शर्मा, श्री महेश चन्द्र शर्मा 'विनोद' सूरीनाम के डॉ. जीत नराइन, पंडित हरदेव सहू, अमर सिंह रमण, हरिदत लघ्मन 'श्रीनिवासी', आशा राज कुमार, सुरजन परोही आदि, मारीशस के अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, बीरसेन जागा सिंह, भानुमती नागदान, सरिता बुधु, प्रहलाद राम शरण ने हिंदी को निरंतर समृद्ध किया है और विश्व स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाई है। फीजी का हिंदी साहित्य ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा कनाडा में बसे हुए भारतीयों के मध्य तथा सूरीनाम का साहित्य हॉलैंड तथा योरोप के अन्य देशों में, मारीशस का साहित्य दक्षिण अफ्रीका तथा अफ्रीका महाद्वीप के अन्य देशों में जहाँ भारतीय बसे हुए हैं, बड़े शौक से पढ़ा जाता है और इस प्रकार विश्व के अनेक देशों में भारतीय साहित्य पहुँचता है। प्रवासी भारतीय साहित्य जो गिरमिटिया वंशजों द्वारा लिखा साहित्य है उसके महत्व को भारत ने पिछली शताब्दी के नवें दशक के आसपास पहचाना और इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य प्रकाशित हुए। भारतीय ज्ञानपीठ ने 'प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य' नामक बृहत् ग्रन्थ प्रकाशित किया तो राष्ट्रीय साहित्य अकादमी ने 'फीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' तथा 'मारीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' और राजकमल प्रकाशन समूह ने 'सूरीनाम का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' नामक बृहत् ग्रन्थ प्रकाशित किये। अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों में भारतीय डायस्पोरा विभागों की स्थापना हुई और प्रवासी भारतीय विशेषकर हिंदी के सृजनात्मक साहित्य का विधिवत् अध्ययन अध्यापन प्रारम्भ हुआ।

भारत एक महा देश है। भारत आज एक अरब से भी अधिक जनसंख्या वाला तथा १६५२ भाषाओं वाला देश है। भारत की विशाल वाचिक और लिखित साहित्यिक सम्पदा से विश्व परिचित है। तमिल और संस्कृत की सम्पन्न साहित्यिक सम्पदा हमें उत्तराधिकार में मिली है। आज जितना साहित्य प्रतिवर्ष भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है उतना साहित्य प्रतिवर्ष पूरे योरोप में भी सम्भवतः प्रतिवर्ष प्रकाशित नहीं हो

रहा पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्त सृजनात्मक रचना का बहुत थोड़ा अंश ही दूसरे देशों तक पहुँच पाता है। पारस्परिक भाषिक बोधगम्यता का न होना इसमें सबसे बड़ी बाधा है। इस बाधा से उबरने का एकमात्र उपाय 'अनुवाद का सेतु' है जिसके माध्यम से एक भाषा की सम्वेदना दूसरी भाषा तक पहुँचती है। बहुभाषी भारत के लिए यह सेतु स्वदेश के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है वैश्विक स्तर पर। भारतीय साहित्यिक अभिव्यक्ति को विश्व भर में पहुँचाने के लिए, वैश्विक क्षितिज पर भारतीय साहित्य की प्रतिष्ठा हो सके इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय भाषाओं के अच्छे साहित्यिक संचयन तैयार हों और वे कम से कम विश्व की प्रधान भाषाओं में अनूदित हों। जैसे भारतीय भाषाओं की रचनाएँ हिंदी में अनूदित होकर सम्पूर्ण भारत में पहुँच जाती हैं उसी प्रकार भारतीय साहित्यिक रचनाएँ जर्मन, फ्रांसीसी, स्पेनी, रूसी, अरबी और चीनी में अनूदित होकर विश्व बाज़ार में पहुँच सकेंगी। हिंदी के प्रेमचंद और बांग्ला के रबीन्द्रनाथ टैगोर तो अनुवाद के माध्यम से ही विश्व के साहित्य प्रेमियों तक पहुँचे हैं पर भारतीय साहित्य तो इतना विशाल और सम्पन्न है कि उसकी वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए अनुवाद के ही सेतु को सशक्त करना होगा। आज विदेशी भाषाओं में अनूदित समकालीन भारतीय साहित्य परिमाण में इतना कम है कि वह भारतीय साहित्य की वैश्विक द्वचि नहीं बना सका है। प्रेमचंद के गोदान और निर्मला, भीष्म साहनी के तमस, कृशन चंदर के दादर पुल के बच्चे, जैनेन्द्र के त्याग पत्र, श्रीलाल शुक्ल के राग दरबारी आदि जैसी कुछ ही साहित्यिक कृतियों से विदेशी परिच्छित हो सके हैं। अन्य भारतीय भाषाओं का समकालीन साहित्य जो हिंदी साहित्य की ही तरह समृद्ध और विपुल है, वह अभी भी विदेशी साहित्य प्रेमियों तक नहीं पहुँच पाया है। हम आशा करते हैं कि इस नयी सदी में हम अनुवाद के अंतरराष्ट्रीय सेतु को पुष्ट कर सकेंगे और हिंदी सहित भारत की विभिन्न भाषाओं की अकूत साहित्यिक सम्पदा को विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगे जिससे भारतीय साहित्य की वैश्विक द्वचि और प्रभावी बन सकेगी।

मेरा शहर

वंदना वात्स्यायन

बड़ी-बड़ी मीनारों वाला

रौनक से भरपूर

अरमानों की ऊँचाई छूने वाला

मेरा शहर आज शांत है

मेरा शहर आज उदास है।

कहते थे दिन-रात कभी ये न सोता है
वो आज भी न सोता है पर उदासी में रोता है
मेरा शहर
जगमगाती बिजलियों की चकाचौंध-सा होता था
मेरा शहर में हर एक दिन नया-सा होता था
पर आज
मेरा शहर शांत है
मेरा शहर आज उदास है।

बस्ती-बस्ती
गली-गली
सब जैसे रह गये हैं ठहर
ठहर गये हैं अब आठों पहर
क्योंकि
मेरा शहर शांत है
मेरा शहर आज उदास है।

वो ब्रॉडवे की भीड़भाड़
और अप से डाउन टाउन का ताव
वो सड़कें वीरानी
हैं जिनकी अनगिनत कहानी
आज शांत है
क्योंकि
मेरा शहर आज कहानियों में एकांत है
मेरा शहर आज शांत है
मेरा शहर आज उदास है।

अचरज से भरपूर
लेडी लिबर्टी की शान से चूर

वो सायरन का बजना
अचम्भित-सा कर जाए
टैक्सी और कार का
रफ्तार में आना
इसी को तो कहते हैं
शहर का गाना
पर आज
सब शांत है
मेरा शहर आज उदास है।

वो क्रिसमस में शहर का
दुल्हन-सा सजना
लोगों का वहाँ मिलना और जुलना
वो टाइम्स स्क्वायर के रातों की लाली
सजती थी जब सेंट्रल पार्क की भी डाली
लगता था जैसे होने वाली है शादी
पर आज सब शांत है
क्योंकि मेरा शहर आज उदास है।

ऐ मेरे मौला इतना करम करना
मेरे शहर को अब
संक्रमण के चरम पर ना रखना
मेरे शहर को फिर से हँसा देना
क्योंकि मेरा शहर
सपनों की उड़ान है
मेरे शहर में
हम सब की जान है।

भारतीय शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन की पहल

डॉ. गिरीश्वर मिश्र

(पूर्व उपकुलपति महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा)

स्मरणीय है कि शिक्षा का सम्बन्ध ज्ञान और व्यक्तित्व के परिष्कार से होता है जिससे शरीर, बुद्धि और आत्मा का विकास हो सके। दूसरे शब्दों में सर्वांगीण विकास ही उसका मकसद होता है। प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य परम्परा थी और गुरुकुल की संस्था स्वायत्त रूप में कार्य करती थी और भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही तरह के विषयों में ज्ञान का अर्जन और विस्तार होता था। वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति, दर्शन, आयुर्वेद, योग आदि शास्त्रों के ग्रंथों के विशाल संकलन और नालंदा, तक्षशिला तथा विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय विद्या केन्द्रों की कीर्ति इस सुदृढ़ परम्परा के जीवंत प्रमाण हैं। काल क्रम में हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों से इस ज्ञान परम्परा का ह्रास हुआ तथापि इसकी आतंरिक प्रतिरोधी शक्ति ने इसे किसी न किसी तरह जीवित रखा। इसे भारत के सामाजिक जीवन और संस्कृति से बहिष्कृत करने का कार्य अँग्रेजी राज ने किया। भारत में पहुँचने पर यहाँ की शिक्षा व्यवस्था को देख वे चकित थे और उसकी शक्ति को आँक कर उन्होंने इसे समाप्त करने में ही अपना लाभ देखा और अंततः लार्ड मैकाले की नीति के अनुरूप एक पराई शिक्षा और उसके माध्यम से पश्चिमी संस्कृति, मूल्य और जीवन शैली को भारत में इस तरह रोपा गया कि इस पद्धति में पढ़ कर निकलने वाला व्यक्ति भारत और भारतीयता से अपरिचित ही न हो बल्कि उसके प्रति संशयग्रस्त हो जाय। दो सदियों लम्बे औपनिवेशिक दौर में भारतीय शिक्षा का कायाकल्प हो गया और औपनिवेशिक धारा को इस तरह आत्मसात कर लिया गया कि वही प्रामाणिक हो गई और भारतीय ज्ञान परम्परा अवैध करार कर कटघरे में डाल दी गई। ज्ञान का केंद्र पश्चिम हो गया और आर्थिक-राजनैतिक उठा-पटक में ऐसा दाँव-पेंच चला कि उसे ही सार्वभौमिक ठहरा दिया गया। ज्ञान की यह वर्चस्ववादी प्रवृत्ति 'विज्ञान', 'विकास' और 'सेकुलरवाद' आदि के तर्कों के सहारे और स्थानीय को अजूबा ठहराते हुए ज्ञान और संस्कृति की स्वाभाविक विविधता को हाशिए पर धकेलती गई। औद्योगिकरण और वैश्वीकरण की प्रवृत्तियों ने इसे और भी बल प्रदान किया।

उक्त परिप्रेक्ष्य में शिक्षा कैसी दी जाय इस प्रश्न पर स्वतन्त्र भारत में चर्चा तो होती रही और कुछ बदलाव भी हुए पर समग्र दृष्टि से परिवर्तन की बड़े दिनों से प्रतीक्षा थी। शिक्षा नीति - 2020 देश की आवश्यकताओं का आकलन करने के उपरांत व्यापक विचार विमर्श के बाद प्रस्तुत हुई है। इसके अंतर्गत अध्ययन कार्यक्रमों के लक्ष्यों, पाठ्यक्रमों की संरचना, शिक्षण की युक्तियों में व्यापक बदलाव का प्रस्ताव किया गया है। अध्ययन कार्यक्रमों के लक्ष्य को विद्यार्थी की योग्यता, अभिरुचि और उपयोगी कौशलों को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित किया गया है। पूर्व प्राथमिक से आरम्भ कर उच्च शिक्षा तक पाठ्यक्रमों की संरचना को लचीला बनाया गया है ताकि विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार अध्ययन विषयों का चुनाव कर सके। वाणिज्य, कला और विज्ञान की अब तक चली आ रही परिपाटी से अलग हट कर नए तरह की संयुक्तियों को ले कर भी पढाई की जा सकेगी। अर्थात् विज्ञान या वाणिज्य विषय वाला छात्र भी साहित्य विषय ले सकेगा। साथ ही परीक्षा की प्रक्रिया को भी सरल और अधिक मानकीकृत करने की दिशा में प्रयास किया जायगा। स्नातक स्तर पर छात्रों को एक, दो, तीन या चार वर्ष की अवधि की पढाई का अवसर दिया जायगा और वे संस्मान प्रमाण

पत्र, डिप्लोमा, डिग्री ले कर जा सकेंगे। चार वर्ष तक स्नातक की पढाई वे विद्यार्थी ही करेंगे जो उच्च शिक्षा और शोध कार्य में रुचि रखते हैं। छात्रों पर पढाई को बाहर से थोपने के बदले उनकी अंतः प्रेरणा और सृजनात्मक प्रवृत्ति के अनुकूल अध्ययन का अवसर मिलेगा। इस तरह का प्राविधान समग्र विकास के लिए विषय और विद्यार्थी के लिए दक्षताओं और कुशलताओं की पहचान करने में सहायक होगा। यह याद रखना होगा कि दक्षता को केवल बाजार की जरूरत के रूप में न समझा जाए बल्कि उसे समग्र विकास के प्रारूप के रूप में समझा जाए। इसके लिए महात्मा गांधी का विचार कि उत्पादक, सर्जक और नैतिक मस्तिष्क होना चाहिए, अधिक प्रासंगिक है।

उच्च शिक्षा की सीखने की पारिस्थिति को दक्षता और आवश्यकता आधारित बनाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। इसके आयोजन में बौद्धिक विकास और अनुप्रयोगात्मक कौशल के साथ नैतिक आचार और टिकाऊ विकास की दृष्टि का भी पोषण करना होगा। विषयकेन्द्रित पुस्तकीय ज्ञानार्जन की जगह ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ना उपयोगी होगा। इसी प्रकार जीवन के तनावों को देखते हुए योग तथा स्वास्थ्य को समृद्ध करने वाला शैक्षिक परिसर विकसित करना भी लाभदायक होगा। इस हेतु शिक्षणशास्त्र की उपयुक्त युक्तियाँ, शोध, समावेशी दृष्टिकोण और आधुनिक प्रौद्योगिकी की तकनीकों का उपयोग भी जरूरी होगा। देश की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दूर शिक्षा का महत्व बढ़ जाएगा। नयी व्यवस्था में जो लोग उद्योग क्षेत्र में जुड़े हैं उन्हें सैद्धान्तिक और बहुविषयी ज्ञान देने के लिए इसे एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में विकसित किया जा सकता है। भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का विकास देश की एक बड़ी आवश्यकता है। इस क्रम में अनुवाद के स्थान पर मौलिक रचनाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

उच्च शिक्षा में अवसरों की समानता सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत और व्यवस्थागत सुधारों को क्रियान्वित करना होगा। महाविद्यालयों की सम्बद्धता प्रणाली के स्थान पर स्वायत्त उच्च शिक्षा संस्थानों का विकास राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक संचालन को लचीला किंतु प्रभावकारी बनाना, शोध का बढ़ावा देना, अध्यापकों को बेहतर कार्य संस्कृति का भागीदार बनाना जरूरी कदम होंगे। उनकी नियुक्ति, प्रमोशन और अन्य अभिप्रेरणाओं को सुनिश्चित करना और बहुअनुशासनात्मकता को ध्यान में रखते हुए उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस क्रम में वास्तविक समस्याओं के समाधान द्वारा सीखना, अन्वेषण विधि, मननशील लेखन आदि तरीकों का उपयोग किया जाना चाहिए। साथ ही विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम के स्वदेशीकरण के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और भारतीय ज्ञान परम्परा को स्थान मिलना चाहिए।

यह ध्यान रखने की बात है कि नई शिक्षा नीति किसी शून्य में नहीं बल्कि आज की परिस्थिति में लागू की जानी है। अतएव व्यावहारिक स्तर पर जिन समस्याओं से शिक्षा आज जूझ रही है उनको अनदेखा नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से अध्यापकों की नियुक्ति तथा संसाधनों को सुनिश्चित करने के साथ ही शिक्षा के निजीकरण पर ध्यान देना होगा। आज निजीकरण एक महा दैत्य की तरह विस्तार पाता जा रहा है। निजी शिक्षा संस्थाएँ पूर्व प्राइमरी से लेकर उच्च स्तर तक निरंकुश भाव से फैलती जा रही हैं और शिक्षा की एक प्रति संस्कृति को जन्म दे रही है। इनमें मनमानी दर पर फीस उगाही जाती है और शिक्षा की गुणवत्ता के साथ हर तरह के समझौते किए जाते हैं। उनकी गुणवत्ता को लेकर भी प्रश्न चिह्न खड़े हो रहे हैं। अतः निजी शिक्षा संस्थाओं के लिए प्रभावी नियामक और निगरानी की व्यवस्था की सख्त जरूरत है। चूँकि सरकारी संस्थान थोड़े हैं और उनके विशेषज्ञता के क्षेत्र भी सीमित होते हैं। उनमें छात्रों का प्रवेश बड़ी सीमित संख्या में ही हो पाता

है. वहाँ पर बड़ी कठिन प्रतिद्वंदिता है. आरक्षण आदि के कायदे कानून को लागू करने के कारण इनमें सामान्य छात्रों का प्रवेश पाना और भी कठिन हो जाता है. ऐसे में विद्यार्थियों और उनके पालकों को तरह-तरह की असुविधाओं का सामना करना पड़ता है. सरकारी संस्थानों की अपर्याप्तता के कारण लाचार हार कर विद्यार्थियों को निजी संस्थाओं की ओर रुख करना पड़ता है. मँहगी और कम गुणवत्ता के बावजूद भी बच्चों को निजी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश दिलाना मजबूरी हो जाती है. अतः सरकारी शिक्षा संस्थाओं की सामर्थ्य को बढ़ाने के प्रभावी उपाय करने होंगे. आज प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक सभी संस्थाएँ अध्यापकों के भीषण अकाल से जूझ रही हैं. यह स्थिति कई वर्षों से बनी हुई है जिसका खमियाजा पूरी शिक्षण व्यवस्था उठा रही है. केंद्र और राज्य सरकारों के नीति निर्माताओं को कानूनी और अन्य व्यवधान दूर कर अविलम्ब शिक्षकों की भर्ती का काम पूरा करना होगा.

शिक्षा की सुविधाएँ बढ़ाने के लिए दूर शिक्षा की प्रणाली शुरू की गई ताकि दूर दराज के विद्यार्थियों और नौकरी पेशा में लगे लोग भी सरलता से शिक्षा प्राप्त कर सकें. शिक्षा की औपचरिक संस्थागत दुनिया के समानांतर कोचिंग और ट्यूशन की दुनिया भी बसती गई है और आज हर शहर में इसका व्यापार परवान चढ़ रहा है. इसकी राजधानी बनी कोटा नगरी की कहानी सर्व विदित है. शिक्षा की अर्थ व्यवस्था में कोचिंग क्लास चलाने वाले संस्थानों की बहुत बड़ी हिस्सेदारी हो गई है.

आज अधिकांश विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में समय-समय पर जरुरी परिवर्तन नहीं कर पाते हैं. इसका प्रमुख कारण विश्व विद्यालयीय प्रक्रिया की जटिलता और आलस्य है. साथ ही अकादमिक जगत में व्याप्त परिवर्तन के प्रतिरोध की मानसिकता भी यथास्थितिवाद को प्रश्रय देती है. विश्वविद्यालयों में शासकीय हस्तक्षेप कुछ अधिक ही हो रहा है.

नई शिक्षा नीति निश्चित रूप से बड़े उत्साह के साथ सरकार द्वारा एक महत्वाकांक्षी योजना के रूप में रखी गई है. इतना साहसिक प्रस्ताव देख सारा शिक्षा जगत सुखद आश्र्वय और आशा के साथ प्रतीक्षा कर रहा है. इसे लागू करने के लिए पर्याप्त संसाधन के प्रावधान करने के साथ ही प्रचलित व्यवस्था की कठिनाइयाँ और प्रतिरोधों का भी व्यापक स्तर पर समाधान करना होगा. बिना जरुरी तैयारी के नेक नीयत से तैयार हुए नए भारत की संकल्पना वाले इस दस्तावेज का कार्यान्वयन असम्भव होगा. निरंतर उपेक्षा के कारण सरकारी शिक्षा व्यवस्था की बढ़ती मुश्किलों के बदौलत शिक्षा आज एक चक्रव्यूह में फँसी हुई है जिससे उबारना जरुरी है. शिक्षा नीति के रूप में जो अवसर मिला है उसका देश हित में लाभ लेने के लिए दृढ़तापूर्वक आधारभूत व्यवस्थाएँ सुनिश्चित करनी होंगी जिसके लिए केंद्र और राज्य की सरकारों को देश हित में मिल कर कार्य करना होगा.



तलाश

विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

लगभग चालीस वर्ष बाद राधे काका होली पर परिवार सहित मुम्बई से अपने गाँव आये। बदले-बदले गाँव को देख, काका रोमांचित थे उनकी आँखें गाँव के कण-कण को पहचानने का प्रयास कर रही थी। काका, देख कहीं रहे थे, चल कहीं रहे थे। तभी अचानक एक पुराने घर के अहाते से फेंका हुआ गंदा पानी काका के कपड़ों पर आकर गिरा, सब कपड़े खराब हो गये। बहु-बेटों को ये अच्छा नहीं लगा, वे भला-बुरा कहने लगे।

आवाज सुनकर, एक बूढ़ी घर से बाहर आई और कहने लगी - "बूढ़ी हूँ, दिखाई नहीं देता, आप लोग मुझे माफ कर दो।"

बूढ़ी को देख व उसकी आवाज को सुन, भीगे हुए राधे काका बोले - 'क्या तुम साबो भाभी तो नहीं हो !'

"अरे, मुझे भाभी कहने वाले तुम कौन हो ? बूढ़ी ने कहा ।

"पहचाना नहीं, तुम्हारे मोहल्ले का सबसे ज्यादा शरारती बदमाश तुम्हारा देवर राधे ।"

राधे का नाम सुनकर, बूढ़ी साबो की आँखों में आँसू आ गये और कहने लगी- "लाला मुझे माफ कर देना!"

"नहीं, भाभी नहीं, ये तो मेरे पुराने कर्मों का फल है। मैं, भी तुम्हें होली के दिनों में बहुत सताया करता था मानों वो पुराना हिसाब आज चुकता कर दिया ।"

बूढ़े राधे को साबो भाभी क्या मिली मानो वो पुराने बीते हुए दिन मिल गये जिनकी तलाश में वो मुम्बई से गाँव आये थे....

यह तुम तो नहीं

अनुप्रिया

तुम्हारे आस-पास

उगाये गए हैं

संस्कारों के जंगल

निर्मित किये गए हैं

तुम्हारे चारों ओर

सभ्यता के

ऊँचे-ऊँचे किले

तुम्हारे कमरे की

खिड़कियाँ

की गयी हैं बंद

किसी साजिश के तहत



नोचे गए हैं
 तुम्हारे कोमल सपनों के
 सकुचाये पंख
 कि
 नहीं देख सको तुम
 आसमान की ऊँचाइयाँ
 कुतर दी गयी है
 तुम्हारी रात
 किसी धारदार औजार से
 तुम्हारी आँखों में
 अब बुझने लगे हैं
 हौंसलों के टिमटिमाते दिये
 कहीं दूर उड़ गयी है
 तुम्हारी मुस्कुराहटों की फुदकती चिड़िया
 शायद किसी
 पिंजरे में बंद है अब तक
 अपने आप में गुम,
 तुम
 कहाँ कर पाती हो बातें
 अपने आप से भी
 कहाँ से लाती हो इतना धैर्य
 इतनी हिम्मत
 कि
 हँसने कि बात पर हँसती नहीं
 और न ही रोना रोती हो,
 कहाँ छुपा कर रखे हैं तुमने
 अपने आँसू
 कहाँ छुपा कर रखा है
 अपना आप
 यह तुम तो नहीं, यह तुम तो नहीं



सीपियाँ, समुंदर और सरकार

डॉ. सन्दीप अवस्थी

"यह झुगियाँ और टपरियाँ और झोपड़ियाँ हट जाएँ तो जमीन के भाव आसमान पर। सोना उगलेगी जमीन और हमेशा के लिए आमदनी का रुत्रोत।" कहते हुए बिल्डर गुप्ता ने पैग का धूँट लिया। "और यह ऐरिया है लगभग ५० एकड़ और सामने ही समुंदर है। समझते हैं सी फेसिंग की बैल्यू? अंतरराष्ट्रीय स्तर की कम्पनियाँ आएँगी, बड़े माल, सिनेमा, जिले का विकास और रोजगार के अवसर अलग से" - यह थे मुख्य अभियन्ता केशवानी अपने नक्शे और ड्राफ्ट्स के साथ।

"परन्तु यह लोग पाँच दशकों से यहाँ रह रहे हैं, मछलियाँ पकड़ रहे हैं और इसी बस्ती के कद्दे बाजार में बेचते हैं। पूरे महानगर के लोग यहाँ की स्वादिष्ट मछलियों की खातिर यहाँ आते हैं। यहाँ की मछुआरिनों का कोई संगठन भी है।" विधायक जी ने चश्मे से झाँकती अपनी धूर्तता भरी आँखों को सिकोड़ा।

"हो जाएगा, सब हो जाएगा, बस आप अपनी योजना को पक्का कर लो। तकनीकी युग है जरा-सी जोर जबरदस्ती राष्ट्रीय न्यूज बन जाती है, फिर रोकना मुश्किल होता है। अतः जो भी हो वह सबके भले के लिए हो" - चिकन चबाते जन की आवाज, दैनिक अखबार के सम्पादक बोले।

"दे तो रहे हैं अच्छा आफर। यह झुगियाँ, जितने परिवार हैं सबको वन रुम का फ्लैट। और रोजगार के लिए दूसरे तट पर जगह। साथ में दस हजार रुपया।"

"बिल्डर साहब, क्या शानदार योजना है। इससे कोई इनकार कर ही नहीं सकता। जब कद्दी झोपड़ी की जगह पक्का फ्लेट मिल रहा हो तो कौन मूर्ख इनकार करेगा।" कहते हुए मुख्य अभियंता अपना पैग दुबारा बनाने लगे। इस तरह पचास में से ५ एकड़ जमीन इनके लिए चली जाएँगी। क्योंकि ३एकड़ पर तो १० मंजिली इमारतें बनेगी जिनमें यह आ जाएँगे। और बाकी ४५एकड़ पर मॉल, सिनेमा, हाई फाई फ्लैट और विलालगभग १००० करोड़ का खेल। और इनसे जमीन लेने में कुल खर्च २५करोड़ से भी कम। इस तरह सब खुश, कोई मानव अधिकार हनन नहीं। सबको न्याय और घर।" विधायक जी संतुष्टिपूर्ण ढंग से बोले, "और पार्टी को नाम, यश, महानगर की शान में और इजाफा, रोजगार और उन्नति के नए रास्ते। हाईकमान खुश। और विधायक जी मंत्री बनने के सपने देखने लगे।

"हम यहाँ से नई जाएगा। यह जगह हमारी है और हमारी माँ-बाबू भी यहीं काम करते थे। हमें यहाँ से कोई बेदखल नहीं कर सकता।" यह बात लेकर वह सारी मछुआरिनें पिछले ३दिन से धरने पर थी। मीडिया में खबर आ गई थी और कई चैनल वाले वहाँ तैनात थे। पर यह इन गरीबों की आवाज ही नहीं दिखा रहे थे। यह दिखा रहे थे बहुआयामी इमेज से भविष्य के विकास की तस्वीरे। गगनचुम्बी इमारतें, सी फेसिंग फ्लैट्स और महानगर की शान में एक और कलगी। कुछ चैनल वाले तो दो कदम आगे बढ़ गए थे। वह इन लोक धरा के लोगों को ही अविकसित, अनपढ़, प्रगति विरोधी सिद्ध करने में लग गए थे। नक्सली बताना बाकी था। वह भी यह बिकाऊ मीडिया कर देता परन्तु जंगल थे, न खनिज तो कैसे? अपने-अपने आकाओं के इशारे पर वह लगे हुए थे। एक दिन, स्वयं किसान परिवार के मुख्यमंत्री के कानों तक यह मुद्दा पहुँचा। वह कुछ-कुछ समझे, क्योंकि बिल्कुल जमीनी स्तर पर खेतीबाड़ी और मजदूरी करते हुए ही वह यहाँ तक आए थे।

आंदोलन को आज १५वाँ दिन था। सोमा, उस आंदोलन की मुखिया, अपने साथियों के साथ धरने पर डटी हुई थी। "विकास क्या सिर्फ ऊँची इमारतों और अमीरों के लिए ही होता है? हम लोग जो जमीन के हैं, क्या अब तक सरकारी मदद से ही जिंदा थे? क्या यह समंदर, मछलियाँ सरकार देती हैं? नहीं, यह हमारा प्रभु देता है, वह समंदर देवता देता है। हम इतने बरसों से शांति से गुजर बसर कर रहे कभी यहाँ स्कूल, दवाखाना नहीं बना। दूर जाकर ही इलाज कराते या बिना इलाज ही मर जाते।" सोमा धाराप्रवाह बोलती गई सभी चैनलवाले उसे लाइव दिखा रहे थे। क्योंकि उसने कल आत्मदाह का ऐलान कर दिया था। यदि यह झुग्गी हटाने का फरमान वापस नहीं हुआ तो।

"लेकिन विकास, उन्नति, खुशहाल जीवन? बच्चों का भविष्य? "एक स्ट्रिंगर ने अपनी समझ से बड़ा सवाल पूछ डाला।

"यह सब हमें अब मिल रहा है। हमारे बच्चे स्कूल जाते हैं। यह मेरी बड़ी बेटी नोवी में आई है। और तुम बताओ सुगनी।

सुगनी धरने पर बैठी औरतों में से एक, गौरवर्ण, आँखों में चमक और हाथों में भरी-भरी सीपियों, छोटे-छोटे शंखों से बनी चूड़ियाँ। जब बोली तो समझ आ गया कि देश को आज़ादी वास्तव में मिल चुकी है। "हमारे बच्चे सब पढ़ते भी हैं और यहाँ हमारे बीच हमारे काम में हाथ भी बँटाते हैं। वह सुबह स्कूल जाने से पहले यहाँ रोज टपरी पर बैठते भी हैं। यहीं तो वह है जो प्रधानमंत्री भी कहते हैं क्या शब्द है वो.....कहते-कहते वह रुकी, और सामने भीड़ में खड़े बच्चों से बोली, ऐ बोलो रे.....

"स्टार्ट अप, स्टार्टअप सभी खिलखिलाते हुए बोला।"

"हाँ वही। यह तो हमारे बच्चे बरसों से करते रहे। अपनी पढ़ाई और अपना काम। क्यों साथियों? कहते हुए वह बैठी। जोर की तालियाँ बजी। सोमा ने गर्व से कैमरों की तरफ देखा और बोली, "जब सबको जीने का हक्क है तो विकास-उकास के नाम पर हमें क्यों उजाइने की सोचते हैं सरकार? क्या हमारे से कोई दिक्कत है? क्या हम शहर के नहीं? क्या इस हवा पानी पर हमारा हक्क नहीं? क्या हमने कभी भी अपने लिए कुछ माँगा, हड़ताल की? जैसी जो जिंदगानी मिली उसे हम अपने हाथों से, कर्म से सवार रहे हैं। तो क्या दिक्कत है? ए रुखसाना बता तो जरा तेरा बैंक ..।"

तभी सकुचाती हुई रुखसाना खड़ी हुई, हाथ जोड़ नमस्ते किया। पता चला इस मछुआरो की बस्ती की कुछ दसवीं पास लड़कियों और महिलाओं ने आपसी सहमति और विचार से बचत बैंक बनाया।

अपने पास बच रहे कुछ पैसों से स्वयं सहायता समूह जैसा एक बचत का उपक्रम किया जो कुछ ही वर्षों में बहुत सुदृढ़ हो गया। रुखसाना बताते हुए बोली, "इस बार दीवाली पर मुनाफे में से सभी सदस्यों को ५ वर्तनों का सेट दिया जाएगा।" सुनकर सभी की तालियाँ बजी। रिपोर्टर हैरान थे, जब बड़े-बड़े बैंक दिवाला निकाल रहे तो यह गरीब औरतों का बैंक मुनाफा बाँट रहा? और सब खुश! ऊपर से यह धरने का दसवाँ दिन और सारे कार्य हो रहे हैं। घर कोंन देख रहा? तभी सूर्यास्त होते-होते अनगिनत ढोंगियाँ समुंदर की लहरों पर दीपशिखा सी इठलाती नजर आई। दिन भर जाल लेकर समुंदर में गए लोग लौट रहे हैं। कुछ ही देर में मछलियों का ढेर लग गया, यह दूसरा कोना था छोटे से बाजार का। ग्राहकों की भीड़ की भीड़ उमड़ रही थी। साँस लेने की फुरसत नहीं। "वाह", दिल्ली में बैठा चैनल हेड बोला, क्या iim, iit बताएँगे? मैनेजमेंट यह होता है कि एक ओर ताजा मछलियाँ लाकर टोकरों से निकाल छूँटाई बड़ी छोटी, रोहू, मेघी, स्टार, आदि दूसरी ओर उनको टपरी पर रखकर बेचने वाले टोकरे अलग। साथ ही बिक्री की जगह थोड़ा ही लगभग पाँच सौ मीटर आगे। वहाँ तक

टोकरों को ले जाने के लिए जुगाड़ गाड़ी यानी लकड़ी की ठेले नुमा दो पहिए की गाड़ी। अलग-अलग नम्बर यह यहाँ, वह वहाँ। सब कुछ सहकारिता पर आधारित व्यवस्था। कैमरे ने दिखाया और डोंगियों की भीड़ लगी किनारे। उनमें बेशुमार मछलियाँ और वह थोड़ा आगे बायीं ओर उतरी। यहाँ से होटलों और मार्केट के लिए टोकरों में भरी जाएँगी। टोकरों के पास खड़ी युवा लक्ष्मी एक कॉपी में पेसिल से कुछ लिखती जा रही थी। सभी टोकरे कमोबेश बड़े आकार के और भाव एक हजार रुपए प्रति टोकरा। जिनमें कम से कम बीस किलो मछलियाँ होगी। और यह क्या धड़ा-धड़ टोकरे बिकते जा रहे और नए भर के आते भी जा रहे। चाहे सात तारा होटल हो मछली तो वर्सोवा से ही आती है। जहाँ २५०ग्राम मछली बेकड़, मसालों संग फ्राई करके कम से कम चार सौ रुपए की प्लेट सर्व होती है, जी एस टी अलग से।

सबका सुव्यवस्थित संचालन देखती लक्ष्मी और टीम। मानों प्राचीन सभ्यता की तरह विशाल सुव्यवस्थित स्त्री सत्तात्मक व्यवस्था। जहाँ कोई अनाचार, अन्याय, शोषण नहीं है। बल्कि हर एक के लिए कार्य, जिम्मेदारी और परिश्रम के साथ लाभ में भागीदारी है। "सबका हिसाब हो गया या कोई रह गया?" लक्ष्मी हिसाब लिख चुकी थी आज का और अब वह रिपोर्ट करने कुछ दूरी पर बने खोखे नुमा काउन्टर पर जा रही थी। जहाँ मछलियों की आवक और बिक्री का ब्यूरो दो युवतियाँ कंप्यूटर पर सब दर्ज कर रही थीं।

कैमरामैन के साथ आई रिपोर्टर बोली, "यह सब दर्ज करके यहाँ से सभी को हर पखवाड़े बिक्री का लाभांश दिया जाता है। और वह सब स्त्रियों को ही दिया जाता है। अर्थ व्यवस्था उन्हीं के हाथ है।" प्रधान सेवक ने यह रिपोर्ट देखी और कुछ सोचते हुए टीवी बंद किया।

सोमा धरने पर अन्य औरतों के साथ डटी थी। बहुत मजबूत इरादों के साथ। दरअसल मजदूर, किसान, चर्मकार, कुम्हार, बैलों को यह लुभावनी घुट्टी दो कि हम तुम्हें मकान, काम के लिए मशीन, बढ़िया जूता, ठंडे पानी की मशीन, अन्न देंगे तो वह हँसेगा। और आपको ऐसे देखेगा जैसे आप बिजूका हों। क्योंकि यह तो वह खुद ही कर लेता है। बिना किसी सरकारी मदद के। अन्न, सब्जी उगाना, पाँव के लिए जूता, पीने खाने के बर्तन, मजदूरी कर मकान बनाना आदि तो वह अपनी कड़ी मेहनत से खुद कर लेता है। और एक-दो नहीं बल्कि करोड़ों की संख्या में हैं ऐसा करने में सक्षम लोक शिल्पी। और उनकी बहुरिया, अर्धांगनी अरे बाबा रे.... वह तो मेहनत, हुनर, हँसले और घर बाहर सब सभालने में इनसे भी दो हाथ नहीं दो कोस आगे। व्यवहार कुशल अलग। अभी यहीं दिख रहा जब अंधियारा होने पर सोमा की जवान होती लड़की वृंदा उसके पास आई। साथ में सकुचाता सा, पतला-दुबला एक युवक भी। दरअसल यह प्रेम, प्यार कब दिलों में खरपतवार-सा उग आता है, कोई नहीं जानता। अनुभवी लोगों की एक निगाह सब देख समझ लेती है। और कुछ संदेह रह जाता है तो वह ऐसी मुलाकात में दूर हो जाता है जो होने जा रही। भोजन करके टैंट के नीचे सड़क किनारे बैठी लगभग दस बारह औरतें सोमा के साथ थीं। इन्हीं के सामने प्रेम कहानी की परतों की पड़ताल सोमा बाई, सरपंच ने प्रारम्भ की। जहाँ शहरी, पढ़े-लिखे लोग प्यार को छुपाते हैं। डर-डर कर जीते हैं वहीं लोक के यह वासी उसे एक सामान्य घटना के रूप में लेकर सबके सामने ही बात करते हैं। सोचें कितनी सहजता से वह कहे-अनकहे डरों से बचते ही नहीं, सभी के सामने एक ट्रेंडसेट कर देते हैं।

"बैठो-बैठो। दोनों के लिए जगह बनाओ भई।" सोमा मुस्कराई पर उसकी आँखें लड़के पर ही थीं।

"बाई यह मैंने कहा था न, यह।"

सोमा ने हाथ से रोका और कहा, "रे छोरी, इसे ही बोलने दे। यह क्या गूँगा है?" सब हँस पड़े। फिर सुगनी बोली, "लगता है बाहर गाँव का है।" लड़का साँवला-सा, आँखों में चमक, सपने कुछ कर दिखाने

के। बाल फैशनेबल, रंगीन बुशर्ट, सस्ती जीन। अपनी हडबडाहट को छुपाता विनम्रत से गला साफ करता वह बोला, "जी मैं अक्षय, आपकी बस्ती के पीछे वाली बस्ती में मेरी गुमटी है।" सोमा, सुगनी और लक्ष्मी ने देखा, "और...साफ-साफ बोलने का। यहाँ पूरी रात अखाइच काम है हम लोगों को। माने समझा न" लक्ष्मी का इशारा समझ गया वह।

"प्रेस का ठेला है परली तरफ कोने पर। काम ठीक-ठीक चल रहा है। वृदा...वह रुका...और मैं शादी बनाना चाहते हैं।" एक साँस में कह गया वह।

"हम्म, और कुछ? मतलब माँ बाप, देस?"

"वह बिहार में है। यहाँ कुछ दिनों के लिए आए थे।"

"और वृदा को वहाँ ले जाओगे? बिहार?" वृदा कुछ बोलने को हुई पर सोमा की निगाह देख चुप हो गई।

"वहाँ से तो यहाँ आया था। मुम्बई में सबके लिए रोजगार है तो...।"

"कबसे जानते हो इसे?"

"छह महीनों हो गए होंगे। तभी हमने शादी का सोचा।"

"छह नहीं आठ महीने हो गए हैं। हमें भी पता है। यह सब लोग जो हैं एक परिवार है। सबके बच्चा लोगों को सब जानते हैं। मछली पकड़ते, बेचते हुए सब सबकी निगाह में रहते हैं। तुम्हारी बस्ती और प्रेस के ठिकाने को भी। यह रुखसाना वहीं जाती है टोकरी में मच्छी बेचने कर्ड बार।"

सुनते ही अक्षय का चेहरा फक पड़ गया। फिर बोला, "जी अच्छी बात है। हो सकता है आठ महीने हुए हो।"

"कहाँ-कहाँ घुमाया मेरी छोकरी को?"

वह सकुचाया, वृदा की ओर देखा और कुछ नहीं बोला।

"अरे बताने का न। आई सब जानती है फिर भी पूछ रही।" वृदा प्यार भरी नजरों से देखती मुस्कराई।

वह सकुचाता सा बोला, "हम दोनों न झूलों वाला बागीचा, (उसे हैंगिंग गार्डन बोलते रे), चौपाटी, सिद्धि विनायक, हाजीअली साहब की दरगाह, बागुलनाथ मन्दिर जो परिंदा पिकचर में था, गए।"

"ऐ छोरी, --सुगनी आश्र्य से बोली, "अक्खा मुम्बई घुमली तू तो, क्या तेरी आई बाबा कभी नहीं घुमाए? यहींच पैदा हुई तू फिर भी।" एक ठहाका लगा और फिर नजमा बोली, "अरे तू क्या जाने जब कोई चाहने वाला मिलता है न उसके साथ सैंकड़ों बार देखी जगह भी जन्मत सी लगती है।"

"हाँ भई, तुझे बड़ा अनुभव है, हम तो यहीं बस्ती में पैदा हुए और यहीं उस खोंपचे से इस गली में आ गए"- कहते हुए लक्ष्मी ने एक ठंडी आह भरी, "अब तो मोनू, सोनी के बाबू कहीं बाहर ही नहीं ले जाते।" सब हँस पड़ीं। सोमा बोली, "मैं बोलेगी तेरे मर्द से कि बीबी बन गई तो क्या कभी कभार हमारी लक्ष्मी को बाहर शहर दिखाने ले जाया करा। खुद तो सारा दिन टैक्सी में घूमता ही रहता है।" एक हँसी की लहर सबको भिगोती चली गई।

बात की बात में लड़के से मुलाकात पूरी हुई। लड़का आँखों ही आँखों में पास।

"विकास की राह में रोड़ा हैं यह लोग। चाहते हैं कभी भी विकसित न हो। क्या किया जाए?" यह जिला प्रशासन के मुखिया डीएम साहब थे।

"मेरा ही चुनाव क्षेत्र है पर मेरी ही बात नहीं सुनते। बस एक ही रट है कि हम यहाँ से नहीं जाएँगे। अब ऐसे लोगों का क्या किया जाए जो जंगल, जमीन, समुंदर को ही अपना भगवान, अल्लाह मानते हों।" "इनके वहाँ देखा मैंने कोई मन्दिर, इबादतगाह नहीं होते। मेरी पोस्टिंग सरगुजा, दंतेवाड़ा रही है। उस बेल्ट में भी कहीं कोई

धार्मिक आस्था का स्थान ही नहीं। कौन हैं यह लोग? जो विकास की भाषा नहीं समझते? क्या करें?" डीएम निराश थे।

"तो वहाँ स्कूल, अस्पताल भी तो नहीं। हमने भी कुछ कम लापरवाही नहीं की इनके प्रति। अब यह भगवान न अल्लाह भरोसे और न सरकार के। यह अपनी मेहनत, लगन और निष्ठा से जीवनयापन करते हैं। कुछ नहीं माँगते हम आपसे। बल्कि न्यूनतम सुविधाओं में गुजर बसर करते हैं।" यह प्रशासन की मदद करने आए भारतीय लेखक संघ के महानगर अध्यक्ष डॉ शुक्ल थे। जो बहुत प्रसिद्ध फिजिशियन हैं। इनके दो क्लिनिक हैं। एक कच्ची बस्ती में जहाँ से इन्होंने चालीस साल पहले प्रैक्टिस प्रारम्भ की थी। वहाँ आज भी बैठते हैं दोपहर तक। और पचास रुपए की मरीज के शुल्क में तीन दिन की दवाई भी देते हैं। दूसरा क्लिनिक पाश इलाके कोलाबा की चौथी रोड पर है जहाँ गणमान्य लोगों को दवाई देते हैं। वहाँ शुल्क तीन सौ रुपए है। पहले इसका भी आधा था। जैसे गरीब बस्ती में मछुआरे भी इनसे दवाई लेकर ठीक हुए। वैसे ही यहाँ कई फिल्मी सितारे भी इनके मरीज हैं। बड़े ही शायराना अंदाज से इलाज करते हैं डॉ शुक्ल। यही लिखने पढ़ने की आदत भारतीय लेखक संघ से जोड़ती है। और यही संवेदनशीलता महानगरों को कॉन्क्रीट का जंगल बनने से बचाती भी है।

"आप क्या कहना चाहते हैं? यह सरकारी प्रोजेक्ट जिससे इस महानगर को एक नया पर्यटन स्थल मिलेगा। आसपास का सौंदर्यकरण होगा। और नए रोजगार के अवसर मिलेंगे। उसे हम इन जाहिलों की नाजायज माँग के आगे गवाँ दें?"

डॉ. साहब धैर्य से मुस्कराए, बोले, "ऐसा है कि हमारे शास्त्रों और समाज में लिखा है कि, यदि हम मानवता का दृष्टिकोण नहीं अपनाएँगे, हम उनको भी शामिल नहीं करेंगे, सरकार की सोच से अवगत नहीं कराएँगे तो कैसे हम उन्हें उनकी जमीन रोजी-रोटी से हटा सकते हैं?"—अपनी बात का असर देखने के लिए कुछ पल वह रुके, सभी को गौर से सुनता पाकर संतुष्ट हुए और फिर बोले, "आपको पता है एक सिर्फ एक व्यक्ति या स्त्री कल को कुछ आत्मदाह जैसा कर लिया न तो सरकार की पूरे मुल्क में वह बदनामी होगी कि बस। और डीएम सर आपका क्या होगा, आप खूब अच्छी तरह समझ सकते हैं!"

डीएम कसमसाया, पहलू बदला, सबको देखा फिर हाथ मसलता बोला, "यही तो। इसीलिए तो पंद्रह दिन से प्रशासन हाथ पर हाथ रखे बैठा है। पर कब तक? जेसीबी के सामने यह लेटे, पुलिस के डंडे खाते रहे पर हटे नहीं। न ही भड़के। ऊपर से नेतृत्व महिलाओं के हाथ में! क्या करें समझ नहीं आता। तभी आपके बारे में पता लगा कि आपकी बहुत इज्जत है इलाके में। सोमा मुखिया सहित सब लोग बहुत मानते आपको। तो अब आप ही रास्ता निकालो।"

"इतना तो नहीं जानता डीएम साहब कि यह लोग मेरा कहना मानेंगे या नहीं। परन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि विकास और नए कार्य जिनके लिए किए जा रहे हैं, यदि वही उनसे सहमत न हो तो बेकार हैं। हमें सहमति बनाने के प्रयत्न करने होंगे।" डॉ. शुक्ल की बातें सुनकर ठेकेदार, जो रूलिंग एमएलए का भतीजा था, से रहा नहीं गया। "मुझे समझ नहीं आता कि जब पैसा सरकार का, जमीन का पट्टा इन लोगों के पास नहीं, शहर को इस प्रोजेक्ट से लाभ मिलेगा, तब इन लोगों से पूछना, सहमति लेना क्यों जरूरी? हटाकर बाहर करो।" डीएम ने यूँ देखा मानों उसने कोई बहुत बेवकूफी की बात सुनली हो। फिर वह विधायक की तरफ मुखातिब हुआ, "कुछ मार्गदर्शन करें सर आप भी।"

विधायक थोड़ा कसमसाया, पहलू बदला फिर मरे से स्वर में बोला, "अब तो आम सहमति से ही उनका हटना बेहतर है। क्योंकि काफी समय हो गया है। मछुआरों, कामगारों, मजदूरों का यह आंदोलन पूरे प्रदेश ही नहीं देश भर में चर्चा का विषय है। कल ही प्रदेश प्रधान सेवक भी इसे सहमति से हल करो या फिर यह प्रोजेक्ट ड्राप करो, की बात कह रहे थे।" कहकर वह रुका, पानी पिया और फिर बोला, "यह औरतों के हाथ में है धरना,

प्रदर्शन और यह कुछ समझती नहीं। मैंने खुद नोटों के बंडल पूरी कार्यसमिति के नाम पर इन्हें देने की पेशकश की थी। बताया था कि ऐसे रोड़ा बनके मत बैठो।"

डीएम सचेत हुआ, "आप हर जगह पैसा इस्तेमाल करते हैं?"

खिसियानी हँसी से ठेकेदार बोला, "पर हुआ कुछ नहीं। सबकी सब ईमानदार निकली। यह गरीब औरतें तो रुखी-सूखी खाने को तैयार हैं परन्तु पैसे को हाथ नहीं लगाती। ऊपर से इनके मर्द, कुछ बेवड़े, मजदूर हैं पर अपनी औरतों की बातों से सहमत हैं। एक भी हटने को तैयार नहीं। वह सोमा जो लीडर है इनकी, बोलती है कि हमें नई सोच, उन्नति, विकास से कोई समस्या नहीं। परन्तु उजाड़ने से है। विकास करो लेकिन हमारी छाती पर पाँव रखकर, हमें बेघर करके नहीं।"

"वह फ्लेट जो बनाकर तुम दे रहे थे हर घर को?"

"बोले यह क्या है? न धूप, न रोशनी न हवा? और हम समुंदर से मच्छी लाएँगे कहाँ से? वहाँ तुम टूरिस्टों के लिए होटल, बीच बना रहे। फिर ग्राहक कहाँ से आएँगे?"

"इन्होंने ज्यादा हूल दिया तो वह सब अड़ गए कि अब तो यही पर काम करेंगे। पीढ़ियों से समुंदर ही हमारी रोजी-रोटी का जरिया है। पहचान है।" कहकर स्थानीय बिचौलियानुमा व्यक्ति चुप हुआ।

"मैं कुछ कहना चाहता हूँ"---डॉ शुक्ल अब तक सब बातें सुन समझ चुके थे वह सोचते हुए बोले, "इनके मध्य से चार-पाँच लोगों को तैयार किया था आपने बात करने के लिए। तब बात नहीं बनी थी। उनसे एक बार फिर बात की जाए और इस बार उन्हें डिविया जैसे फ्लैट के अलावा रोजगार की सम्भावनाओं के बारे में बताया जाए। साथ ही जो आप नहीं कह रहे वही वह समझ रहे हैं। उनके मन से यह भय कि उनकी बस्ती की बस्ती ही हटाई जा रही है, दूर किया जाए।"

"कैसे? क्यों? हमारा तो यही उद्देश्य है। वहाँ इतना भव्य शॉपिंग मॉल, ४ बहुमंजिला इमारतें और सी बीच बनेगा कि शहर के लिए नया पर्यटन स्थल बन जाएगा। और आप चाहते हैं यह न हो?" बिल्डर भड़ककर बोला।

डीएम, एमएलए, उपसचिव सबकी निगाह मिलीं। यही प्रश्न था कि क्या किया जाए?

"देखिए यह सोच बदलनी होगी। मीडिया, सूचना क्रांति के दौर में हम किसी को भी अनजान बन, बेवकूफ बना कर बेदखल करदें। हम जो तय करते हैं कागजों पर जमीनी हकीकत उससे कई बार बिल्कुल उलट होती है। फिर भी आपने कहा है तो मैं इनके मध्य जाता हूँ। और कुछ रास्ता ढूँढ़ता हूँ। पर आप सभी भी थोड़ा-सा बुद्ध के मध्यम मार्ग की तरफ भी जरूर देखें।"

जरूरी मीटिंग बिना हल के अगले कुछ दिनों के लिए स्थगित हुई।

अगले दिन डॉ शुक्ल को जाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह क्लिनिक पर मरीज देख रहे थे कि बस्ती से सोमा का संदेशा लेकर सुगनी आई। "साहब, आज दोपहर कुछ लोग आ रहे हैं। सोमा बाय कहीं की आपको आना है और हमारी तरफ से बात करनी है।" डॉक्टर उसे देख हैरान रह गया। वह पेट से थी और फिर भी कांतला, रोहू, मेंगी मछलियों से भरी टोकरी सिर पर उठाए थी।" तुमको तो घर पर आराम करना चाहिए सुगनी। तुम्हारा आदमी रोकता नहीं तुमको?" "अरे साहब आप भी क्या। हम इधरिच पैदा हुई, इसी समुंदर की हवा पानी से बड़ी हुई, यही मंगल कार्यालय में ब्याह हुआ। कुछ नहीं होता हमको। हम इसी से ही बने हैं। एकदम मजबूत ...है कि नहीं।" कहकर उसने साथ की औरत को देखा। वह बोली, "थोड़ा काम करेगी तो चार पैसा आएगा और अभी दो माह है। वह रामप्यारी दाई है न वह आराम से घर पर डिलीवरी कराती। मेरे दोनों मुलगी मुलगा घरिच पर हुए। वो कहती कोई चिंता की बात नहीं।"

डॉक्टर से दो बजे आने की सहमति लेकर वह चली गई टोकरी में मछली बेचने। जिंदगी कितनी खुरदरी, सपाट और निर्मम होने पर भी जीने के काबिल तो है। अपने रसायन की मियागिरी से कितना उससे तालमेल बैठा सकते हैं यह हम पर निर्भर है।

"-----देखो, तुम्हारे हक्क, अधिकार और स्वतंत्रता को कोई भी नहीं छीन सकता, चाहे सरकार हो या बड़ी कम्पनी। और यह बहुत अच्छा है कि आप सभी ने पंद्रह दिन से धरना प्रदर्शन करके इन्हें रोका हुआ है। पूरा देश और विश्व समुदाय आपके साथ है।" सफेद दाढ़ी, आँखों में यह मोटा चश्मा और साथ में दो मोटी-मोटी किताबों के साथ धीर गम्भीर बुद्धिजीवी लगता, (लगता क्या था ही वो) अपनी बात कहकर चुप हुआ। साथ में उसके तीन साथी जिनमें एक महिला थी जो खद्र की साड़ी, बड़ा-बड़ा काजल और बालों में धूप का चश्मा फँसाए थी। "देखो सोमा बेन, यह नेतृत्व आप महिलाओं के हाथ में होने से इसे और मजबूती मिली है। एक इंच भी जमीन मत देना। हम विस्थापन, गरीबों की विरोधी इस सरकार को हम मुहतोङ जवाब देंगे। आपको जो भी जरूरत पड़े हम देंगे। फिलहाल यह रखो।" उसने तैयार प्लेकार्ड (झोटे, बड़े बोर्ड, सफेद कागज चिपके) लाने का इशारा किया। पीछे खड़ी बड़ी सी गाड़ी से एक व्यक्ति दो कार्डबोर्ड की पेटियाँ ले आया।

"हम सब आपके साथ हैं। आप ही इस देश की अर्थव्यवस्था का आधार हैं। आपकी इस तरह से बेकद्री बर्दाश्त नहीं। जब तक मुख्यमंत्री खुद यह प्रोजेक्ट रद्द नहीं करते हम हिलेगे नहीं यहाँ से!" यह बकील जैसा कोई अधेड़ व्यक्ति था।

"हम?" शब्द सुन साथ आई महिला चौंकी। "मतलब यह सब और इनके साथ हमारे युवा कार्यकर्ता। जो देश भर से अगले कुछ दिनों में यहाँ आ जाएँगे।" तभी बाहर से कुंड केतली और गंदे ग्लासों में चाय ले आया। नमकीन पानी की चाय। तुरंत आए हुए अतिथियों ने चाय तो वह पीते ही नहीं की घोषणा की। फिर कुछ आँखों ही आँखों में बात करके ड्राइवर और एक युवा ने चाय ली।

सोमा, सुगनी, चम्पा, रेहाना और डॉक्टर यह सब पिछले एक घण्टे से देख सुन रहे थे। और यही लग रहा था जैसे घर की सास बहू या पति-पत्नी की बातों में कोई बाहरवाला दखलंदाजी करे। डॉक्टर को ही नहीं सोमा मुखिया को भी लग रहा था यह तो बात ही पूरी कहाँ से कहाँ निकलती जा रही है! यह तो तिल का ताड़ ही नहीं बल्कि विवादों का महल बनाने की तैयारी है।

"कल से धरना प्रदर्शन और तेज होगा। हमारे यूथ विंग के कार्यकर्ता देश के अलग-अलग भागों में आपके पक्ष में और इस बेमुरब्बत सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करेंगे।" यह नवलखा था।

"हमारे टीवी चेनलों को खबर करो कि यहाँ-यहाँ प्रदर्शन होंगे वह कवर करें। और इतना दिखाए कि यह सरकार गरीबों की विरोधी दिखे।" यह फोन पर एक कोने में जाकर वह महिला बोल रही थी। सोमा ने डॉक्टर और अन्य साथियों को "काएय झाला", के भाव से देखा।

डॉक्टर शुक्ल सभी बातों को समझते हुए बोले, "देखिए आप सभी आए, सहयोग की बात की इसके लिए आपको धन्यवाद। परन्तु हमारी बात अब लगभग हल होने वाली है। और सरकार बराबर हमसे सम्पर्क बनाए है। तो हम नहीं समझते कि अभी फिलहाल इतना सब करने की जरूरत है।" यह सुनकर उन चारों ने एक दूसरे को देखा। उनमें से एक तो डॉक्टर पर भड़कने को हुआ पर महिला की चेतावनी भरी निगाह से चुप हुआ।

"आप नहीं समझते। यह एक प्रतीक है आप लोक के कामगारों को गुलामी में जकड़ने का। यह प्रारम्भ है, फिर आपको भूखे-प्यासे रहना पड़ेगा। यह आपको जेल में डाल देंगे। और इंच-इंच जमीन अपने उद्योगपति मित्रों को दे देंगे" --सोमा और महिलाओं से वह बोली।

डॉक्टर ने कुछ बोलने चाहा तो अँगेजी में उसे दाढ़ी वाले ने फटकार दिया।

सोमा मुखिया यह सब देख रही थी, सुन रही थी और समझ रही थी इन जयचन्द्रों, मीरजाफरों के यहाँ आने के उद्देश्य को। समझ जो नहीं रहे थे वह थे निरीह श्रमिक, रोज कुआँ खोद रोज पानी पीने वाले लोग। जिनकी रोजगार और बसने की फिक्र में ही कई पीढ़ियाँ निकल गई और कई निकल जानी हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य कौन देखे इनके लिए? यह बस जिए जा रहे हैं जब तक इनके हाथ-पाँव चल रहे। सांस्कृतिक मूल्य, बोलियों के संवाहक यही लोग हैं। वरना शिक्षित व्यक्ति तो हिंदी ही ढंग से नहीं बोल पाते, बोली तो दूर की बात है। "तो यह कल से बड़े स्तर पर प्रदर्शन, धरना चलेगा। हमारे लोग आपकी हर सम्भव मदद करेंगे।" कहकर उस दाढ़ी वाले ने अर्थपूर्ण ढंग से पीछे खड़े किसी को इशारा किया। तुरन्त दो लोग आगे आए, हाथों में कार्डबोर्ड पर बने प्लेकार्ड (तख्तियाँ) लिए। जिन पर लिखे थे रेडीमेड, बहुउद्देशीय नारे "we want justice" ऐसा विकास नहीं चाहिए, काला कानून वापस लो, न झुकें हैं न झुकेंगे" आदि-आदि। सभी मछुआरिन कसमसा रही थीं यह सब देखकर। सुगनी, सोमा, रेहाना, डॉक्टर कुछ कहना चाहते थे कि उन लोगों ने फिर कुछ रखा। देखा 'नोटों का बंडल। यह आंदोलन को नई दिशा और शक्ति देगा। बिल्कुल भी खान-पीने की चिंता नहीं करनी।' यह मैडमजी थीं।

"सफलतापूर्वक चलाओ, हम जीतेंगे और आपको विदेश यात्रा भी करवाएँगे अमुक कम्पनी के सौजन्य से।" अब डॉक्टर चौंके, उन्हें सब समझ आने लगा। पहले वह सिर्फ भड़काओ सरकार के खिलाफ और अस्थिरता पैदा करो ही समझ रहे थे। पर जब यह नाम सामने आया तो समझ आया कि इन दक्षिण एशियाई देशों में यूरोप की बड़ी-बड़ी कम्पनियों की प्रतिस्पर्धा भी पहुँच चुकी है। दूसरी कम्पनी के प्रोजेक्ट में विवाद पैदा करके मुश्किल खड़ी करना, उसकी वैश्विक बदनामी करना, स्थानीय मुद्दों को हवा देना, श्रमिकों की हितचिंतक बनने का दिखावा करना, (बाद में बरसों-बरस दुबारा झाँकना भी नहीं) मानवधिकारों के पैरोकार बनना। बदले में अपने और परिवार के लिए विदेश यात्रा, फंडिंग करोड़ों में का लाभ लेना। तभी कई तथाकथित बुद्धिजीवी जिन्होंने कभी जिंदगी में ऐसी बस्तियों, आदिवासियों, किसानों की शक्ति नहीं देखी इनके पैरोकार बनकर रातों-रात आ जाते हैं। डॉक्टर सब समझ गए। किसानों के मध्य पहुँच जाते हैं उनके हितचिंतक बन लेकिन रबी, खरीफ और जायद फ़सलों में अंतर तक नहीं जानते। बस भड़काकर अपने विदेशी आकाओं और स्वार्थ के लिए इन निर्दोष लोगों को गुमराह करना। जिससे यह उग्र हो जाएँ और सरकार इन पर कार्यवाही करे तो सरकार की बदनामी। और फिर यह लोक वासी जो कभी कोई, थाने, जेल नहीं गए, की जिंदगी इनमें फ़ैसकर रह जाए। इन्हीं में से कुछ मजबूरी में, कि मैं तो बर्बाद हो गया, चलो अब इसी राह चलता हूँ, जिससे मेरा परिवार पल सके, की सोच से नक्सली, अपराधी, पारदी गिरोह बना लेते हैं। निर्दोष, कम पढ़ेलिखे, भोले-भाले लोगों को इस तरह भड़काना देशद्रोह नहीं? ऊपर से कई इनके हिमायती अपने-अपने जगहों से इन्हें समर्थन देते हैं, कुछ पत्र-पत्रिकाएँ तो खुले तौर पर इनके समर्थन में अभियान चलाती हैं। जिससे युवा, अनजान लोग भ्रमित हो समझते हैं वास्तव में अन्याय हो रहा। जबकि यह लोक जीवन से जुड़े लोग, आम व्यक्ति, मजदूर सभी कुशलतापूर्वक अपनी समस्याओं, उसके लिए क्या करना है इन सबसे परिचित हैं। वह सक्षम हैं अपनी लड़ाई खुद लड़ने में। वह समझता है विकास होगा तो सबके साथ उसका भी होगा। उसे भी अपनी स्तिथि का पता है। लेकिन यह लोग.....

सोमा और साथियों के मध्य दाएँ-बाएँ मुस्कराते हुए खड़े होकर फोटो के लिए पोज दे रहे थे। तभीसोमा बाय बोलने को कुछ हुई फिर चिल्लाकर बोली, "अरे मैं कुछ बोलेंगी या नहीं? सभी तुम लोग तय करोगे कि ऐसे-ऐसे ही होगा? यह आंदोलन हमारा है को तुम्हारा? नहीं चाहिए यह सब। ले जाओ यह तख्ती, पैसा और खुदको भी!"

अचानक से सन्नाटा छा गया। सब फोटो खिंचते रुके, ठिठके, फिर वह सफेद बालों और सूरत से ही बुद्धिजीवी लगती औरत आश्र्य से बोली, "क्या कह रही हैं आप? अरे कोई इतना अच्छा आफर मना करता है?" तभी दूसरे ने बात सँभाली, "कोई जल्दी नहीं। अभी आप सोचलो आराम से।" लेकिन सोमा, सुगनी, रेहाना, चम्पा सब सोच-समझ चुकीं थीं।

"देखो यह सब भड़काऊ बातें की तो की परन्तु अब आप यहाँ से चले जाएँ और दुबारा यहाँ न आएँ। और मुरली कहाँ गया? जो लेकर आया इनको।"

तलाश हुई, मुरली दिखा उन्हीं के पीछे छुपा। सुगनी ने उसे गालियों से नवाजना शुरू किया। सोमा की गुस्सेल छवि देख वह हाथ जोड़ बोला, "मुझे तो यह लोग बोले कि तुमसे मिलवा दूँ तो पूरी बस्ती का भला हो जाएगा।"

"अब तू ऐसे उल्टे-सीधे लोगों को लाया तो तेरी खैर नहीं।"

डॉक्टर शुक्ल ने उनकी ओर देखा और कहा, "आप सभी यहीं पढ़े-लिखे, ऊँचे पद पर पहुँचे फिर यह सब क्या? कौन-से स्वार्थ हैं आपके जो इन जैसे निर्दोष किसानों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, मजदूरों में आग लगाते हो? लालच देते हो? अभी यहीं काम राजधानी में आपके साथियों ने किया कि अमुक धर्मविशेष के लोगों को एन आर सी क्रानून बाहर निकाल देगा। जबकि वह उन लोगों के लिए बना जो दूसरे देशों से के नागरिक अपने ही मुस्लिम बाहुल्य देशों से शान्तिप्रिय, लोकतांत्रिक भारत में अवैध रूप से आ गए। क्योंकि उनका ही देश उन्हें मूलभूत सुविधाएँ नहीं दे रहा। कुछ राजनैतिक दल अपने वोटों के लिए उन्हें अपने राज्यों में बसा रहे। और ऐसे लोग आपका हमारा जो भारतीय धर्मविशेष के लोग हैं उनका हक, संसाधन, सुविधाएँ छीन रहे। ऊपर से हिंसा, भड़काना लोगों को यह सब कर रहे।

डॉक्टर रुके, देखा, सभी मंत्रमुग्ध से उनकी बात सुन रहे। सहमत थे जबकि इन दलालों के चेहरे फक पड़ गए थे।" इस देश के लोग, सबाल्टर्न के लोग चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम वह सब सीधे-सादे अपने हाथों के हुनर और मेहनत की रोटी कमाते हैं। कुछ कम हो जाती है तो भी यह सब इस देश की तरक्की और खुशहाली में आपके-हमारे जैसे बराबर के हिस्सेदार हैं। और अंत में, "आपने देखा ही सोमा बाय और उनके साथियों ने खुद ही आपकी बातों का जवाब नकारकर दिया। तो यह लोग अब जागरूक हैं, समझ रहे हैं आपके कुचक्र को। आप कब समझेंगे? बंद कीजिए अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए इन मासूम लोगों को भड़काना। नहीं तो यह आपको ही समझा देंगे।" कहकर जैसे ही डॉक्टर चुप हुए, सभी आन्दोलनकर्मियों ने ताली बजाकर अपनी मन की बात का इजहार किया। गैंग पिटा-सा मुहँ लेकर विदा हुआ।

"देखें यह नया प्रस्ताव तैयार किया है। कल उस बस्ती के लोगों के प्रतिनिधिमण्डल से धरना स्थल पर हुई बात के जवाब में।" डीएम ने कहा।

बिल्डर भुनभुनाया इसमें मेरे लिए कटौती है। एमएलए संतुष्ट दिखे, उन्हें वोट बढ़ते दिखे। डॉक्टर शुक्ल ने पूरा पढ़कर कहा, "इसमें एक कमी है! वह भी पूरी कर दें तो यह सबसे अच्छा प्रस्ताव ही नहीं बल्कि उन गरीब मछुआरों की आने वाली पीढ़ियों के लिए यादगार सिद्ध होगा।"

"अब क्या डॉक्टर साहब?" नेताजी बोले। डीएम उत्सुक दिखे।"इसमें एक यह बात और जोड़े कि हर परिवार के एक व्यक्ति को इन कम्पनियों में नौकरी भी मिलेगी। कभी मुख्य धारा में आने की इनकी भी तो शुरुआत हो।" डीएम हँसे, "अरे भाई इतने जगह और जॉब्स होंगे कि लोग कम पड़ेंगे। हम बाहर से भी लोगों को काम देंगे। हो जाएगा यह। अब जा रहा हूँ सीएम साहब के पास यह फाइनल ड्राफ्ट दिखाने। फिर कल इसे सबको बता दूँगा।"

सीएम आवास में मुलाकाती कक्ष। अभी भी ऐसे लग रहा मानों सरकारी दफ्तर में काम चल रहा है। रविवार के बाद भी पीए, सचिव सहित दर्जन भर लोग।

"हम्म, ठीक है, "देर तक मुआयना करने के बाद वह अपने गले में पड़ा उपरणा सही करते बोले, "यह अब २१वीं सदी के भारत की सही तस्वीर पेश करता है। जिसमें विकास के नए आयाम भी हैं तो साथ में परम्परागत व्यवसायों से जुड़े लोगों का भी ख्याल रखा है। इसमें सरकार की तरफ से भी कुछ नया इनके लिए होना चाहिए।" कहकर वह मुस्कराए।

मुख्य सचिव, डीएम आदि ने उनकी ओर देखा।

"फूड प्रोसेसिंग यूनिट, फिशेस की एक्सपोर्ट करने की सुविधा। हमने देखा और पड़ा है ऐसा रसायन जिसके लेप से मछलियाँ हफ्तों तक डिब्बाबंद सुरक्षित खाने योग्य बनी रहती हैं। हम सबका विकास चाहते हैं। लोक के इन तबकों के लिए हम नहीं सोचेंगे तो कौन सोचेगा?"

कुछ देर सन्नाटा रहा। ब्यूरोक्रेट्स ने एक-दूसरे की ओर देखा, कुछ मन्त्रणा हुई। मुख्यमंत्री बोले, "क्या हुआ? चुप क्यों हैं मिश्र जी?"

मुख्य सचिव, मिश्र एक घाघ, नफा-नुक्सान समझने वाला आईएएस, "सर, इन लोगों को इतना सब नहीं देना चाहिए। यह और ज्यादा डिमांडिंग हो जाते हैं। आप जानते ही हैं मैनेजमेंट का सिद्धांत। कभी किसी को सारे ब्रेड-बटर एक साथ न दो। पेटभरा नहीं कि वह अन्य हक्क और सुविधाओं की माँग करेगा।" कहकर उन्होंने समर्थन की तरफ देखा तो सभी सहमति में सर हिला रहे थे।

मुख्यमंत्री मंद-मंद मुस्कराए, बोले, "इतने दशकों से इसी पालिसी पर चलते हुए देश का एक बड़ा तबका अभी तक अल्प विकसित ही है। हमारे गाँव, हस्तशिल्पी, कारीगर, मछली पालन, गोसेवक, आदिवासी, दुर्घट उत्पादक, स्वदेशी, कुटीर उद्योग विकसित नहीं हो पाए। क्यों? क्योंकि कई दशकों तक आप जैसे ब्यूरोक्रेट्स और नेताओं ने ऐसी ही उल्टी राय देकर इन्हें आज तक विकसित नहीं होने दिया। ऐसा करते वक्त आप जैसे लोगों ने यह नहीं सोचा कि यह हमारे संविधान के सबको बराबरी और समानता के अधिकार के खिलाफ है? इन्हीं नीतियों और सोच की वजह से समाज में आर्थिक खाई और चौड़ी हुई है। पर हम ऐसा नहीं सोचते। और यह प्रस्ताव ऐसा ही जाएगा। हम इसे कैबनेट में मंजूरी के लिए कल ही रखवा रहे हैं।"

दो दिन बाद डॉ शुक्ल, सोमा मुखिया, मुख्यमंत्री ने प्रधान-सेवक के साथ बेहद गरिमापूर्ण ढंग से एशिया के सबसे बड़े माल और रहवासी योजना का उद्घाटन किया। साथ ही मछुआरों के लिए आवासीय कालोनी, फूड प्रोसेसिंग यूनिट की नींव रखी। जो वहाँ से मात्र आधे घण्टे की दूरी पर समुंदर के नजदीक ही है। जिसमें देश विदेश के लिए मछली और उससे बनने वाले उत्पादों को पैक करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बिक्री के लिए ले जाया जाएगा। दो उद्योगपतियों ने अपने प्रस्ताव भी दे दिये। हर परिवार से एक को नौकरी के अलावा मछुआरिनों की सहकारी समिति को लाभांश में पाँच टके का हिस्सेदार भी बनाया गया। और जो अनुपम सौगात मिली वह यह नई बस्ती में दवाखाना, स्कूल की सुविधा भी दी गई। वहीं उनके फुटकर मछली बिक्री के लिए पक्की गुमटियाँ भी बनाकर पहले दी जा रही हैं। नुक्सान बहुत हुआ स्वार्थ का परन्तु विश्वास और अपनेमन का लाभ हुआ। नफे की मात्रा कम की जगह और बढ़ी क्योंकि सहकारिता की भावना बढ़ी तो अधिक अवसर मिले। और यह माँडल बहुत सराहा गया जिसमें पुरातन और आधुनिकता का समन्वय किया गया।

परन्तु कुछ लोग अभी भी दुखी हैं। उनकी तस्वीरें, टीवी इंटरव्यू जो नहीं आते। रसरंजन करते हुए बेरोजगार हो चले हैं। दरअसल आप मजदूर, किसानों, स्त्रियों, आदिवासियों आदि को बार-बार धोखे देने और प्रताड़ित करने की बहुत छोटी-सी कीमत चुका रहे हैं।

नारी अस्मिता प्रश्नों के दायरे में क्यों

डॉ. मुक्ता
(पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी)

यह तो सर्वविदित है कि सृष्टि निर्माण के लिए नियंता ने आदम और हव्वा की कल्पना की तथा दोनों को इसका उत्तरदायित्व सौंपा। हव्वा को उसने प्रजनन-क्षमता प्रदान की तथा दैवीय गुणों से सम्पन्न किया। शायद! इसलिये ही माँ बच्चे की प्रथम गुरु कहलायी। जन्म के पश्चात् उसका अधिक समय माँ के सान्निध्य में गुज़रा। सो! माँ के संस्कारों का प्रभाव उस पर सर्वाधिक पड़ा। वैसे तो पिता की अवधारणा के बिना बच्चे के जन्म की कल्पना निरर्थक थी। पिता पर परिवार के पालन-पोषण तथा सुरक्षा का दायित्व था। इसलिए सांस्कृतिक परिवेश उसे विरासत में मिला, जो सदैव पथ-प्रदर्शक के रूप में उसके साथ रहा।

प्राचीन काल से स्त्री-पुरुष दोनों एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। परन्तु सभ्यता के विकास के साथ-साथ पितृ-सत्तात्मक परिवार अस्तित्व में आए। वैसे कानून-निर्माता तो सदैव पुरुष ही रहे हैं। सो! स्त्री व पुरुष के लिए सदैव अलग-अलग कानून बनाए गए। सभी कर्तव्य नारी के आँचल में डाल दिए गए और अधिकार पुरुष को प्राप्त हुए। औरत को चूल्हे-चौंके में झोंक दिया गया और घर की चारदीवारी ने उसके लिए लक्षण रेखा का कार्य किया। जन्म के पश्चात् वह पिता के साए में अजनबी बनकर रही तथा उसे हर पल यह अहसास दिलाया गया कि यह घर तेरा नहीं है। तू यहाँ के लिए पराई है, अजनबी है। तुझे तो पति के घर-आँगन की शोभा बनना है। सो! वहाँ जाने के पश्चात् तुम्हें उस घर की चौखट को नहीं लाँघना है। हर विकट परिस्थिति का सामना अकेले ही करना है। तुम्हारे लिये यह समझ लेना आवश्यक है कि जिस घर से डोली उठती है, अर्थी वहाँ से कभी नहीं उठती। इसलिए तुम्हें यहाँ अकेले लौट कर कभी नहीं आना है।

वह मासूम लड़की पिता के घर में इसी अहसास से जीती है कि वह घर उसका नहीं है। सो! वहाँ उस पर अनेक अंकुश लगाए जाते हैं। पहले दिन से ही बेटी-बेटे का फ़र्क उसे समझ आ जाता है। माता-पिता का व्यवहार दोनों से अलग-अलग किस्म का होता है।

बचपन से खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने में भी भेदभाव किया जाता है और पढ़ाई जारी रखने के लिए भी उनकी सोच व मापदंड अलग-अलग होते हैं। उसे आरम्भ से ही घर के कामों में झोंक दिया जाता है कि उसे तो ससुराल जाकर नया घर सँभालना है। उसके लिए सारे क्रायदे-कानून भाई से अलग होते हैं। उसके रोम-रोम में परिवार की इज़ज़त व मान-मर्यादा इस कदर घर कर जाती है और रच-बस जाती है, जिसे वह चाहकर भी भुला नहीं पाती। अनेक बार उसका हृदय चीत्कार कर उठता है, परन्तु पिता व भाई के क्रूर व्यवहार को स्मरण कर वह सहम जाती है। उस के मन में विचारों के बबंडर उठते हैं कि नारी अस्मिता ही प्रश्नों के दायरे में क्यों?

क्या पुत्र द्वारा कृत दुष्कर्म के हादसों से परिवार की मान-मर्यादा पर आँच नहीं आती...उनकी भावनाएँ आहत नहीं होती? जब उसे हर प्रकार की स्वतंत्रता प्रदत्त है, तो वह उससे वंचित क्यों? हर क्षूर के लिए वह ही दोषी क्यों? ऐसे अनगिनत प्रश्न उसके मन को सालते हैं तथा उसके गले की फाँस बन जाते हैं। परन्तु वह लाख प्रयत्न करने पर भी उनका विरोध कहाँ कर पाती है।

हाँ! नए घर की सुंदर कल्पना कर, रंगीन स्वप्न सँजोए, वह मासूम ससुराल में कदम रखती है। परन्तु वहाँ भी, उस माहौल में वह अकेली पड़ जाती है। सबकी नज़रें सी•सी•टी•वी• कैमरे की मार्निंद उस नादान की हर गति-विधि पर लगी रहती हैं। पहले दिन से ही शुरू हो जाती है--- उसकी अग्नि-परीक्षा। ससुराल के लोग उसे प्रताड़ित करने का एक भी स्वर्णिम अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहते। वह कठपुतली की भाँति उनके आदेशों की अनुपालना करती है...अपनी आकंक्षाओं का गला घोंट नत-मस्तक रहती है।

परन्तु फिर भी वह कभी कम दहेज लाने के कारण, तो कभी परिवार को वंशज न दे पाने के कारण, केवल तिरस्कृत ही नहीं होती..उसके लिए तैयार होती है... मिट्टी के तेल का डिब्बा, गैस का खुला स्टोव व दियासलाई, तंदूर की दहकती अग्नि, छत या नदी की फिसलन, बिजली की नंगी तारों का करंट। सो! उसे सहन करनी पड़ती हैं, जीवन भर अमानवीय यातनाएँ, जिसे नियति स्वीकार उसे ढोना पड़ता है। वह जीवन भर इसी उहापोह में पल-पल जीती, पल-पल मरती है, परन्तु कभी उफ़्र नहीं करती। प्रश्न उठता है कि ये सब हादसे उनकी बेटी के साथ क्यों घटित नहीं होते? इसका मुख्य कारण है— माता-पिता का अपनी पुत्रवधु में बेटी का अक्स न देखना। वास्तव में वे भूल जाते हैं कि उनकी बेटी को भी किसी के घर-आँगन की शोभा बनना है।

इस तथ्य से तो आप भली-भाँति परिचित होंगे कि औरत को उपभोक्तावादी युग में, बढ़ते बाज़ारवाद के कारण वस्तु-मात्र समझा जाता है। जब तक उसकी उपयोगिता रहती है, उसे सहेज कर रखा जाता है, सिर आँखों पर बैठाकर, सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु उसके पश्चात् खाली बोतल की भाँति घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है।

हाँ! पति परमेश्वर है, जो कभी गलती कर ही नहीं सकता। उसका हर वचन, हर कर्म सत्य व अनु-करणीय समझा जाता है। वह अपनी पत्नी के रहते किसी दूसरी औरत से सम्बंध स्थापित कर, उसे अपने घर में स्थान दे सकता है और अपनी पत्नी को घर से बे-दखल करने में सक्षम है। आश्वर्य होता है यह देखकर कि पत्नी की अर्थी उठने से पहले ही पति के लिए नये रिश्ते आने प्रारम्भ हो जाते हैं और वह शमशान तक की यात्रा में भी पत्नी का साथ नहीं देता...उसे अग्नि देने की बात तो बहुत दूर की है। वह निपट स्वार्थी तो उसी पल नई नवेली जीवन-संगिनी के सपनों व कल्पनाओं में खो जाता है।

परन्तु यथास्थिति में पति के देहांत के बाद औरत को जीवन भर वैधव्य की त्रासदी को झेलना पड़ता है। इतना ही नहीं सुराल वालों के दंश 'यह मनहूस है, डायन है... हमारे बेटे को खा गई' आदि झेलने पड़ते हैं। वे भूल जाते हैं कि उनका बेटा उसका पति भी था, जिसने उसे जीवन-संगिनी 'औ' हमसफ़र बनाया था। वह उसका भाग्य-विधाता था, जो उसे बीच भँवर अकेला छोड़ चल दिया उन राहों पर, जहाँ से लौटकर कोई नहीं आता। ज़रा! सोचिए, क्या उसकी निरीह पत्नी पर विपत्तियों का पहाड़ नहीं टूटा होगा? क्या उसे पति का अभाव नहीं खलता होगा? वह अकेली अब जिंदगी के बोझ को कैसे ढोएगी? काश! वे उस मासूम की पीड़ा को अनुभव कर पाते और उसे परिवार का हिस्सा स्वीकार उसका मनोबल बढ़ाते, उसे आश्रय प्रदान करते और अहसास दिलाते कि वे हर असामान्य-विषम परिस्थिति में, ढाल बनकर सदैव उसके साथ खड़े हैं। उसे अब किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं।

परन्तु होता उससे उलट है... परिवार के लोग उस पर बुरी नज़र डालना प्रारम्भ कर देते हैं तथा उसे नरक में धकेल देते हैं। वह प्रतिदिन नये हादसे का शिकार बनती है। कई बार तो उनकी नज़रों में जायदाद हड्डपने के लिए, उसे रास्ते से हटाना अवश्यंभावी हो जाता है। वे उस पर गलत इल्ज़ाम लगा, घर से बेघर कर अपनी शेषी बघारते नहीं थकते। फिर प्रारम्भ हो जाती है... उस पर जुल्मों की बरसात।

यदि वह पुलिस स्टेशन रिपोर्ट लिखवाने जाती है, तो वहाँ उसका शोषण किया जाता है। कानून के कटघरे में उसके चरित्र पर ऐसी छींटाकशी की जाती है कि वह न्याय पाने का विचार त्याग, वहाँ से भाग जाने में ही अपनी बेहतरी समझती है। यहाँ भी लाभ प्रतिपक्ष को ही मिलता है। उनके हौसले और बुलंद हो जाते हैं तथा वह मासूम जुल्मों को नियति स्वीकार अकेली निकल पड़ती है और ज़िन्दगी की उन राहों पर बढ़ जाती है, जो उसके लिए अनजान हैं। प्रश्न उठता है, 'नारी ही सदैव कटघरे में क्यों? पुरुष पर कभी कोई आक्षेप आरोप-प्रत्यारोप क्यों नहीं?' क्या वह सदैव दूध का धुला होता है? जब किसी मासूम की इज़ज़त लुटती है, तो लोग उसे

अकारण दुत्कारते हैं; लांचित करते हैं; दोषारोपण करते हैं, परंतु उस दुष्कर्मी को शक की बिनाह पर छोड़ दिया जाता है। वह दुष्ट सिर उठाकर जीता है, परन्तु वह निर्दोष, समाज में सिर झुकाकर अपना जीवन ढोती है और उसके माता-पिता भी आजीवन ज़लालत भरी ज़िन्दगी ढोने को विवश होते हैं।

क्या अस्मिता केवल औरत की होती है, शील-भंग भी उसी का होता है। शायद! पुरुष की तो इज्जत होती ही नहीं...इसीलिये उस पर कभी, किसी प्रकार की आँच भी नहीं आती। हाँ! यदि औरत इन यातनाओं-यंत्रणाओं को सहन करते-करते, जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण व जीने की राह बदल लेती है, तो वह कुलटा, कुलक्षणी, कुलनाशिनी व पापिनी कहलाती है। जब से नारी ने समानाधिकारों की माँग की है, महिला सशक्तीकरण के नारों की गूँज तो चारों ओर सुनाई पड़ती है, परन्तु उसके सुरक्षा के दायरे में सेंध लग गई है। नारी आज न घर के बाहर सुरक्षित है, न ही घर के प्रांगण में और न ही पिता व पति के सुरक्षा-दायरे में... लोग उसकी ओर गिर्द नज़रें लगाए बैठे हैं।

यह बतलाते हुए मस्तिष्क शर्म से झुक जाता है कि आजकल तो कन्या ध्रूण रूप में भी सुरक्षित नहीं है। उससे तो जन्म लेने का अधिकार भी छीन लिया गया है..अन्य सम्बन्धों की सार्थकता की तो बात करना ही व्यर्थ है। पति-पत्नी के सात जन्मों का पुनीत सम्बन्ध-बंधन आजकल 'लिव-इन' में परिवर्तित हो गया है। 'तू नहीं और सही' व 'खाओ-पीओ, मौज उड़ाओ' की संस्कृति का हमारे कोमल मन पर एकाधिकार हो गया है। संयुक्त परिवार ही नहीं, अब तो एकल परिवार भी निरंतर टूट रहे हैं। एक द्वितीय के नीचे पति-पत्नी अजनबी बनकर अपना जीवन बसार कर रहे हैं। सामाजिक सरोकार समाप्त हो रहे हैं। इसकी सबसे अधिक हानि हो रही है...हमारी नई पीढ़ी को, जो स्वयं को सबसे अधिक असुरक्षित अनुभव कर रही है। पिता की अवधारणा का कोई महत्व शेष रहा ही नहीं; पति-पत्नी जब तक मन चाहता है, साथ रहते हैं और असंतुष्ट होने की स्थिति में जब मन में आता है, एक-दूसरे से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेते हैं। पश्चिमी समाज विशेष रूप से अमेरिका में पितृविहीन परिवारों के आँकड़े इस प्रकार हैं ... १९६०में ८०% से अधिक बच्चे माता-पिता के साथ, उनकी सुरक्षा में रहते थे। १९९० में यह आँकड़ा ५८% और अब यह ५०% से भी नीचे पहुँच गया है। इनमें से २५% बच्चे अनव्याही माताओं के साथ रहते हैं और करोड़ों बच्चे माँ और सौतेले पिता के साथ, जिससे उनकी माता ने संबंध-विच्छेद के पश्चात् पुनर्विवाह कर लिया है या उसके साथ बिना विवाह के लिव-इन में रह रही हैं।

आज हमारा देश पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट का 'लिव-इन' को मान्यता प्रदान करना, तलाक की प्रक्रिया को सुगम बनाना और विवाहेतर सम्बन्धों को हरी झंडी दिखाना, समाज के लिये घातक ही नहीं, उसे बढ़ावा देने के लिए काफी है। वैसे भी आजकल तो इसे मान्यता प्रदान कर दी गई है। विवाह के मायने बदल गए हैं और विवाह संस्था दिन-प्रतिदिन ध्वस्त होती जा रही है। इसमें दोष केवल पुरुष का नहीं, स्त्री का भी भरपूर योगदान है। एक लम्बे अंतराल के पश्चात् औरत गुलामी की ज़ंजीरें तोड़कर बाहर निकली हैं...सो! मर्यादा की सीमाओं का अतिक्रमण होना तो स्वाभाविक है। उसने भी जींस कल्वर को अपना लिया है और वह पुरुष की राहों को श्रेष्ठ मान उनका अनुकरण करना चाहती है। वह प्राचीन मान्यताओं को रुढ़ि स्वीकार, केंचुली सम त्याग देना श्रेयस्कर समझती है... भले ही इसमें उसका अहित ही क्यों न हो। घर से बाहर निकल कर नौकरी करने से, जहाँ वह असुरक्षा के घेरे में आ गई है; वहीं उसे दायित्वों का दोहरा बोझ ढोना पड़ रहा है। घर-परिवार में उस से पूर्ववत् अपेक्षाएँ की जाती हैं। हर स्थिति में पुरुष अहं आड़े आ जाता है और वह उस पर व्यंग्यबाण चलाने में एक भी अवसर नहीं चूकता। हर-पल ज़लील करने का हक्क तो उसे विरासत में मिला है, जिससे स्त्री के आत्मसम्मान पर चोट लगती है और उसे मुखौटा धारण कर दोहरा जीवन जीना पड़ता है। परन्तु कभी-कभी तो वह घर की चौखट लाँघ स्वतंत्र जीवन जीने की राह पर निकल पड़ती है, जहाँ उसे

कदम-कदम पर ऐसे वहशी दर्दिंदों का सामना करना पड़ता है, जो उसे आहत करने का एक भी अवसर नहीं चूकते। प्रश्न उठता है, आखिर कब तक उसे माटी की गुड़िया समझ, उसकी भावनाओं से खिलवाड़ किया जाएगा...आखिर कब तक?

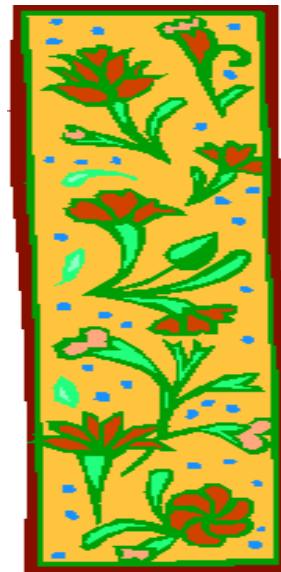
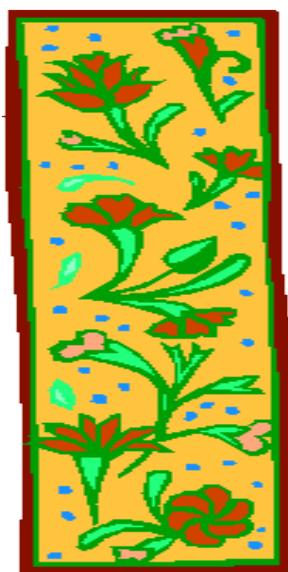
आश्र्वय होता है यह देखकर कि पश्चिमी देशों में तो भारतीय संस्कृति को हृदय से स्वीकारा जा रहा है और मान्यता प्रदान की जा रही है, जिसका स्पष्ट उदाहरण है भगवद्गीता को मैनेजमेंट कोर्स में लगाना ... निष्काम कर्म की महत्ता को स्वीकारना तथा जीवन सम्बंधित प्रश्नों का समाधान गीता में तलाशना, उनके हृदय की उदारता व सकारात्मक सोच का परिणाम है। परन्तु हम भगवद्गीता को इस रूप में मान्यता प्रदान नहीं कर पाए...यह हमारा दुर्भाग्य है। हमारी परिवार-व्यवस्था में गृहस्थ-जीवन को यज्ञ के रूप में स्वीकारा गया है। परिवार के बुजुर्गों को देवी-देवता सम स्वीकार उन्हें मान-सम्मान प्रदान करना तथा उस वट-वृक्ष रूपी छाया में संतोष व सुरक्षित अनुभव कर सुकून की साँस लेना... विदेशी लोगों की प्रथम पसंद है तथा उनकी आस्था घर-परिवार व पारस्परिक सम्बंधों में सुदृढ़ हुई है। वे हमारे रीति-रिवाज़, धार्मिक मान्यताओं व ईश्वर में अटूट आस्था-विश्वास की संस्कृति को स्वीकारने लगे हैं। परन्तु हम उन द्वारा परोसी गयी 'लिव इन' और 'ओल्ड होम' की जूठन को स्वीकार करने में अपनी शान समझते हैं।

आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का सेवन करने का परिणाम धातक होता है। यदि नमक का प्रयोग अधिक किया जाए, तो वह शरीर में अनेक रोगों को जन्म देता है। तनाव के भयंकर परिणामों से कौन परिचित नहीं है...वह सभी जानलेवा रोगों का जनक है। अहं इंसान का सबसे बड़ा शत्रु है तथा संघर्ष का मूल है। यह सभी जानलेवा रोगों का जनक है। सो! हमें उससे कोसों की दूरी बनाए रखनी चाहिए और अपनी सोच को सकारात्मक रखना चाहिए। काश! हर इंसान इस भावना व इस मंतव्य को समझ पाता, तो स्त्री अस्मिता का प्रश्न ही नहीं उठता। छोटे-बड़े मिल-जुलकर बुजुर्गों के साए में खुशी से रहते व स्वयं को सुरक्षित अनुभव करते...एक-दूसरे के सुख-दुःख साझे करते ...भावनाओं को समझने का प्रयास करते और हँसते-हँसाते, मस्ती में झूमते हुए उनका जीवन आनंद-पूर्वक गुज़र जाता। मलय वायु के शीतल, मंद, सुगंधित झोंके मन को आंदोलित-आलोड़ित व उल्लसित-आनंदित कर, प्रसन्नता व प्रफुल्लता से आप्लावित करते।

यादों के धागों से....

अंकिता

यादों के धागों से सिलती हूँ ज़ख्म
ममत्व की कलम से लिखती हूँ नज़म
आँखों की कोरों से कहती किस्से कहानियाँ हूँ मैं
चाहत की तारों से करती हूँ लफ़्ज़ !
दर्द धूप में कहराते जब बादलों में छुपाती
पीर की अनोखी रुत तब ग़ज़ल बनाती
दगा बेरुखी होती है एक अद्भुत कला जिंदगी की
मौन हृदय अंकिता की कलम नित बताती!
कविताओं की डोर से भावनाओं की माला ग़ढ़ती
गीत-धुन साँसें पथरों के अस्तित्व में प्रेम भरती
पन्नों पर भाव-अक्षरों की अक्षत बिखेरती हूँ मैं
दिल से दिलों तक उम्मीद की नयी किरण जगती!



अलविदा और स्वागत

संतोष खन्ना

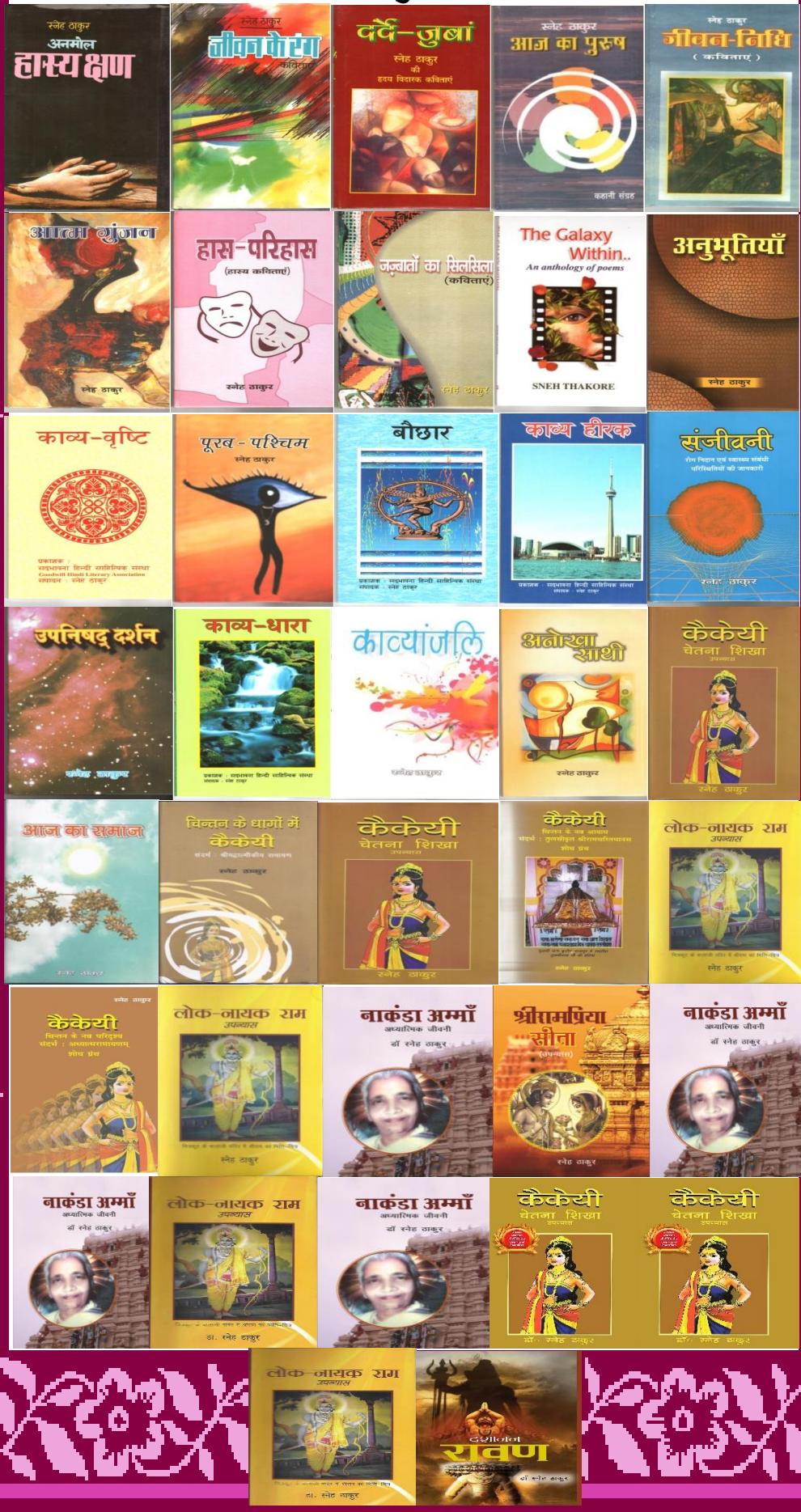
२०२० को अलविदा कहने और
२०२१ का स्वागत करने का समय है साथी
यह रही मेरी सबको शुभकामनाएँ कहने की पाती।

मेरे हृदय का हिमालय
बार-बार उठ खड़ा होता है
वह फैल जाना चाहता है
निरन्तर विस्तार पाते

गगन की तरह
वह मिलना चाहता है
हर मन से, हर कण से
ताकि जान सके वह
उस अनाम सत्ता को
जो सब का विधाता है

कौन-सी जंजीरें
उसे चलने नहीं देती
कौन-सी सीमाएँ
उसे खुलने नहीं देती
जैसे खुलता है गुलाब
जैसे चमकता है चाँद
जैसे चलता है पवन
जैसे उगता है अरुण
फैलाता अग जग प्रकाश।

डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
कैकेयी : चेतना-शिखा	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
लोक-नायक राम	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण)
नाकंडा अम्माँ	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(अध्यात्मिक जीवनी)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, द्वितीय संस्करण)
लोक-नायक राम	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र.
कैकेयी : चेतना-शिखा	अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - आज का समाज	संदर्भ : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(सामाजिक लेख-संग्रह)
अनोखा साथी	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
काव्यांजलि	(कहानी-संग्रह)
काव्य-धारा	(काव्य-संग्रह)
उपनिषद दर्शन	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
संजीवनी	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
काव्य हीरक	(स्वारथ्य सम्बन्धी आलेख)
बौछार	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
पूरब-पश्चिम	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-वृष्टि	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
अनुभूतियाँ	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
The Galaxy Within	(काव्य-संग्रह)
ज़ज्बातों का सिलसिला	(हास्य कविताएँ)
हास-परिहास	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
आत्म-गंजन	(काव्य-संग्रह)
जीवन-नींदि	(कहानी-संग्रह)
आज का पुरुष	(नज़म व ग़ज़ल संग्रह)
दर्दे-जुबाँ	(काव्य-संग्रह)
जीवन के रंग	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेंट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)
अनमोल हास्य क्षण	

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.

४,५ बी., आसफ अली रोड

नई दिल्ली - ११०००२, भारत

Star Publishers' Distributors

55, Warren Street

LONDON – W1T 5NW, England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित